अध्याय – पँचम

सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में विभिन्न विधाओं के कलाकारों का योगदान

वर्तमान में प्रचलित कोई भी विधा या कला हो उसका आधार हमारे समाज के विभिन्न क्षेत्रों या विशेष श्रेणियों से है जिसमें हर सामाजिक श्रेणी अपनी अपनी योग्यता अनुसार कार्य करती है ताकि एक अच्छे समाज की रचना की जा सके समाज की इन्हीं श्रेणियों में से एक श्रेणी कला प्रेमियों की भी है जो अपनी सभ्यता और संस्कृति को विभिन्न कलाओं के माध्यम से प्रस्तुत करती है जिसके अंतर्गत साहित्य कला, मूर्तिकला अथवा चित्रकला से संबंधित कलाकारों का भी अपना विशेष स्थान है।

संगीत कला की बात की जाए तो वर्तमान में कोई ऐसा जनसमूह नहीं होगा जो संगीत कला की विभिन्न विधाओं से अवगत नहीं होगा जहां संगीत के अंतर्गत शास्त्रीय, अर्द्धशास्त्रीय और सुगम संगीत का प्रचलन है, वहीं भक्ति संगीत के अंतर्गत विभिन्न विधाएं विश्व–विख्यात हैं। इसी की भांति सूफीदर्शन में से उत्पन्न हुई सूफियाना गायकी वर्तमान में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं।

सूफी संगीत या सूफियाना गायकी की बात हो तो पंजाब क्षेत्र का ध्यान में आ जाना स्वाभाविक है जहां के संगीत कलाकारों ने सूफियाना गायन को प्रचार प्रसार कर विश्व प्रसिद्ध किया, सूफियाना गायन की बात हो तो ऐसी प्रसिद्ध सांगीतिक हस्तियों के नाम हमारे सामने आ जाते हैं जैसे आबिदा परवीन, नुसरत फतेह अली खान साहब, कव्वाल साबरी बंधु, फरीद अयाज, मेहर अली. शेर अली, पठाने खां, राहत फतेह अली खान आदि सूफियाना गायन संबंधित प्रसिद्ध हस्तियां है जिन्हें आंखों से ओझल नहीं किया जा सकता परन्तु शोध विषय अनुसार वर्तमान पंजाब संबंधित सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार की बात की जाए तो कई ऐसे नामवर सूफी कलाकारों के नाम आ जाते हैं जिन्होंने स्वतन्त्रता पश्चात् वर्तमान पंजाब में सूफियाना गायन को प्रचारित एवं प्रसारित किया है और कर रहे हैं, जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप में मोहम्मद शरीफ, ईरशाद रहमत, ठाकुर दास, निरंजन साईं, अब्दुल मजीद, बशीर खां, मघ्घर सिंह दीवाना या मघ्घर अली दीवाना, उस्ताद

मजीद खां, उस्ताद सोहन लाल, उस्ताद बरकत सिद्धू, वडाली बन्धु उस्ताद पूरन शाह कोटी, बीबी नूरां, साईदा बेगम, करामत फकीर, गुलशन मीर आदि के नाम विशेषनीय हैं। इसके अतिरिक्त सूफी ढाडी परम्परा से संबंधित कलाकारों ने भी सूफियाना गायन को लोक गायकी अंग से ग्रामीण सभ्यता एवं संस्कृतिक मेलों में सूफियाना गायकी का प्रचार प्रसार कर अहम भूमिका निभाई है और सूफियाना गायन की इसी परम्परा को उसके वंशजों द्वारा आगे चलाया जा रहा है, जिसका वर्णन इस अध्याय में किया गया है। शोधार्थी द्वारा शोध विषय सम्बन्धी वार्तालाप के लिए सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में योगदान के अन्तर्गत पंजाब के प्रसिद्ध चुनिंदा वरिष्ठ कलाकारों के साथ साक्षात्कार किए गए और साथ ही वर्तमान के युवा कलाकार जो सूफियाना गायन परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं उनसे भी भेंटवार्ताएँ की गईं। इसी की भाँति पंजाब के प्रसिद्ध महिला कलाकारों द्वारा सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में निभाई गई भूमिका और सूफी ढाडी परम्परा के अन्तर्गत पंजाब के प्रसिद्ध सूफी ढाडी परम्परा से जुड़े हुए कलाकारों के योगदान को भी इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है जिनका वर्णन इस प्रकार है :

5.1 प्रसिद्ध कलाकारों का जीवन परिचय एवं भेंटवार्ताएं :

5.1.1 वरिष्ठ कलाकार :

5.1.1.1 करामत फकीर : (पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल, पटियाला घराना, मलेरकोटला)

चित्र 5.1 : करामत फकीर जी कव्वाली गायन की प्रस्तुति करते हुए

करामत फकीर जी मलेरकोटला (पंजाब) के उन प्रमुख कव्वालों में से एक हैं जिन्होंने कव्वाली गायन परंपरा को पंजाब में शिखर तक पहुंचाया है। पंजाब का यह कस्बा एक ऐसा स्थान है, जिसने कव्वाली गायन परंपरा को संभाल कर रखा

है। सूफी गायन परंपरा में कव्वाली गायन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। अगर पंजाब की सूफी गायन परंपरा का जिक्र करते हैं। तो पंजाब के इस कस्बे के कव्वाल गायकों का ज़िक्र सबसे पहले आता है। करामत फकीर जी का जन्म 24 दिसंबर 1946 ईस्वी को मुबारकपुर (चुंघा) नज़दीक मलेरकोटला, ज़िला संगरूर में हुआ। आपके पिता का नाम फकीर मोहम्मद और माता का नाम बीबी वलाइता था। आपका परिवार 8 पीढ़ियों से सूफी गायन परंपरा को सम्भाले हुए प्रचार प्रसार कर रहा है। आपके दो बेटे गुलाम अली खान और शौकत अली खान इसी परंपरा से जुड़े हुए हैं। दोनों बेटे आपसे ही संगीत की शिक्षा ले रहे हैं और आपकी ख्वाइश है कि यह परंपरा आगे आने वाली पीढ़ियों में भी यूं ही बरकरार रहे और यह परंपरा हिंदुस्तान से बाहर विदेशों में भी विकास करें।

करामत फकीर जी मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, कोलकाता, जम्मू और दिल्ली में अलग–अलग स्थानों पर प्रोग्राम कर चुके हैं। वहीं प्रसिध गायक कलाकारों के साथ मिलकर सूफियाना महफिलें भी की जिसके अर्तगत आपने हंस राज हंस जी के साथ मिलकर कव्वाली गायन भी किया। इसके अतिरिक्त हंस जी के साथ एक ऐल्बम मेरे साहिबा जनवरी 2001 में आई। जिसमें आपने नुसरत फतेह अली खान साहब की कव्वालियां 'नित खैर मंगां सोहणेयां मैं तेरी' और 'आजा तेनु अखियां उडीक दियां' गाई। आपकी अब तक बहुत सारी सूफियाना रंगन की कलामों की ऐल्बम आ चुकी हैं जिनमें से प्रसिद्ध कलाम 'सोने दिया कंगना', 'चोरी चोरी ना जा', 'दीवे बलदे' आदि प्रमुख हैं। आपके शिष्यों में शौकत अली दीवाना, कव्वाल वजीदपुर पटियाला, सोम नाथ हरि, कव्वाल शाहपुर कपूरथला, जगदीश कुमार कव्वाल, नालागढ़ आदि कव्वाली गायन में अपना नाम कमा रहे हैं।

शोधार्थी द्वारा किए साक्षात्कार के आधार पर सूफियान गायन संबंधी पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि सूफी संगीत ऐसी रुहानियत विधा है जो इंसान को उस अल्लाह की इबादत मे अग्रसर होने के लिए सहायक होती है। सूफी फकीर आत्मा और परमात्मा की बात करते है। सूफियाना गायकी की विशेषता के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि सूफी गायन शब्द प्रधान गायन है जिसका लक्ष्य आवाम को खुदा की इबादत की ओर अग्रसर करना है जिसके अंतर्गत

अर्द्धशास्त्रीय एवं सुगम संगीत में सूफियाना गायन का प्रचलन ज़्यादा होता है ताकि साधारण जनता को भी सूफियाना गायन के माध्यम से इबादत के रहस्यों से अवगत कराया जा सके।

सूफियाना गायकी के आधार स्त्रोत के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि सूफियाना गायकी का आधार सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम है जिसके माध्यम से सूफी फकीरों ने पूरी आवाम को प्रेम का पाठ पढ़ाया।

सूफियाना गायकी के आरम्भ के बारे में आपके विचार हैं कि एक मान्यता अनुसार जब हज़रत मोहम्मद साहब जब मदीना की तरफ से होते हुए मक्का की तरफ जा रहे थे तो वहां के लोगों द्वारा मोहम्मद साहब के स्वागत में ड़फ बजा कर कुछ सांगीतिक ध्वनियों को प्रस्तुत किया गया।

उपरांत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती जब भारत में आए तो उन्होंने भारत की संस्कृति को देखते हुए अपने दरबार में समाअ का आयोजन किया और सूफी मत के प्रचार हेतु संगीत को आधार बनाकर सूफी परंपरा का प्रचार प्रसार शुरू कीया और इसी तरह सूफी फकीरों की महफिलों में गायन के साथ–साथ ताली का प्रयोग होने लगा और जो धीरे–धीरे क्वाली रूप में विकसित हो गए। इसके उपरांत 12वीं 13वीं शताब्दी में प्रसिद्ध सूफी फकीर निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो द्वारा सूफियाना गायन का प्रचार प्रसार खूब होने लगा।

चित्र 5.2 : शोधार्थी कव्वाल करामत फकीर जी के साथ साक्षात्कार करते हुए [1]

1. साक्षात्कार, फकीर, करामत, तिथि 5 मई, 2019, स्थान मलेरकोटला

सूफियाना गायन की विभिन्न गायन शैलियों के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि सूफी फकीरों द्वारा इबादत संबंधी अनुभव को विभिन्न काव्य रूप में रचित किया गया जिसमें कॉल, कलबाना, नाअत, हम्द, काफी इत्यादि साहित्य की रचना की गई वही साहित्य संगीत का आधार पाकर सूफियाना गायन कहलाआ और कव्वाल गायकों द्वारा साहित्य के विभिन्न रूपों का गायन किया गया जिसमें कव्वाली और काफी प्रमुख विधाएं हैं और विभिन्न काव्य रूपों को कव्वाली के अन्तर्गत गायन की परम्परा है।

कव्वाली विधा और उसके उसूलों के बारे में बताते हुए कहते हैं कि कॉल गाने वाले कलाकारों को कव्वाल कहा जाता था कव्वाल गायकों के अंदाज़ में गाई जानी वाली रचना कव्वाली कहलाती हैं, शुरुआती दौर में कव्वाली गायन में सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम ही सूफी फकीरों की महफिल में कव्वाली गायन द्वारा प्रस्तुत किए जाते थे जिसे समाअ गायन कहा जाता था कव्वाली एक समूह गायन है और जिसमे ताली का विशेष महत्व है। कव्वाली गायन में सूफी फकीरों द्वारा रचित विभिन्न तरह के साहित्य को एक सिद्धांत के अनुसार गायन किया जाने लगा जिसमें पहले अल्लाह की सिफ्त के लिए हमद, उसके बाद में हज़रत मोहम्मद साहब की प्रशंसा के लिए नाअत का गायन, उसके उपरांत मनकबत द्वारा मौला अली सरकार की प्रशंसा की प्रशंसा की जाती थी उपरांत सूफियाना कलाम गायन किया जाता है और साथ में सहायक रूप में सूफियाना रंग की ग़ज़लों, शायरों की कविता आदि का गायन किया जाता था परंतु वर्तमान में लोगों के पास समय के अभाव के कारण सीधा कलाम ही शुरू कर दिया जाता है या धमाल प्रस्तुत की जाती है। अंत में कव्वाली की लय को जो कि शुरू की लय से काफी बढ़ा ली जाती है, को आधा करके कव्वाली का समापन किया जाता है। इसको कव्वाली गायन का अंदाज़ कहां जाता है। आपके अनुसार कव्वाली में कम से कम 7 और ज़्यादा से ज़्यादा 14 या 15 गायक कलाकार हो सकते हैं।

काफी गायन शैली के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि काफी गायन शैली सूफी संगीत की लोकप्रिय गायन शैली है जिसे हर विधा का कलाकार गाना पसंद करता है। काफी शैली की लोकप्रियता के फलस्वरूप काफियों

के विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर अनेक नाम प्रचलित हैं जैसे : मुल्तानी काफी, सिंधी काफी, पहाड़ी काफी, पंजाबी काफी आदि इन सब में भाषा का ही अंतर है।

सूफी गायकी के घरानों के बारे में बात करते हुए आप कहते हैं कि बहुत से ऐसे घराने हैं जो पहले ख्याल गाते थे, जैसे किराना घराना ख्याल का घराना भी है और सूफियाना गायकी का घराना भी है। इसी की भांति पटियाला घराने के कलाकार शास्त्रीय गायन भी करते थे और उपरांत सूफियाना गायन भी करने लगे जिनमें विशेष नाम नुसरत फतेह अली खान साहब का है इसी की भांति शामचौरासी घराना शास्त्रीय संगीत का घराना है जिसके कलाकारों ने ख्याल के साथ सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में भी अहम भूमिका निभाई। हमारे समक्ष उस्ताद सलामत–नजाकत अली साहब की उदाहरण है जिन्होंने सूफी फकीरों की काफियों को ठुमरी नुमा सटाइल में गायन किया।

मलेरकोटला की कव्वाली गायन परंपरा के बारे में आपके विचार है कि यह शहर मुसलमानों की ज़्यादा आबादी वाला शहर होने के कारण ही यहां कव्वाली का प्रचार और प्रसार भी ज़्यादा है यहां के रहमत कव्वाल, इरशाद रहमत, मोहम्मद शरीफ, मोहम्मद तकी कव्वाल और शौकत अली, मोताई कव्वाली गायन मे बहुत अच्छा नाम कमा रहे हैं। अपने घराने के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि हमारा घराना कव्वाली के प्रसिद्ध घराने मुबारकपुर चुंघां से संबंधित है और करामत अली के नाम से हमारी कव्वाल पार्टी प्रसिद्ध है।

सूफी गायन के माध्यमों की बात करते हुए आपका विचार है कि मुख्य रूप में तो सूफी फकीरों की दरगाहें हैं, जहां पर सूफी फकीरों के उर्स वक्त समाअ के रूप में सूफियाना महफिलें होती हैं। शिक्षण संस्थाओं में उच्च शिक्षा के साथ–साथ भारतीय संगीत के कल्चर संबंधित विभिन्न परंपराओं को भी प्रचारित और प्रसारित किया जा रहा है। इसी के साथ ही विभिन्न संगीत संबंधी संस्थाएँ भी सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में अपना योगदान दे रही हैं।

सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में मीडिया के योगदान के बारे में आपका कहना है कि मीडिया और टी.वी. चैनलस ने सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न तरह के संगीतक मुकाबलों में सूफियाना रंग

की प्रस्तुति होती है और साथ ही सोशल मीडिया ने भी सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण रोल अदा किया है।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में वर्तमान पंजाब के विभिन्न विधाओं के कलाकारों की बात करते हुए आप कहते हैं कि सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों के ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पूर्वी पंजाब का सूफियाना गायकी को विश्व प्रसिद्ध करने में बहुत बड़ा योगदान है जिसके परिणाम स्वरूप आज देश के हर राज्य के कलाकार सूफियाना गायकी से अवगत होने लगे हैं, लोक गायकों ने अपने अंदाज़ में सूफी कलामों का गायन किया, शास्त्रीय गायक कलाकारों ने सूफी रचनाओं का अपने अंदाज़ में प्रस्तुतिकरण किया। तो कह सकते हैं कि जहां दूसरी विधाओं के प्रचार के लिए पंजाब के कलाकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वही सूफी परंपरा के प्रचार प्रसार में भी विशेष भूमिका निभाई है।

सूफियाना गायकी की विरासत को भविष्य में संभाले रखने हेतु आपके सुझाव हैं कि सूफी परंपरा से जुड़े हुए कलाकारों को आर्थिक मदद के लिए पेंशन मिलनी चाहिए, शिक्षण संस्थाओं में सूफी परंपरा एवं सूफी संगीत आधारित विभाग होना चाहिए ताकि दूसरे विषयों की भांति विद्यार्थियों को सूफी संगीत संबंधी सिद्धांतों से अवगत कराया जा सके। सूफी परंपरा से संबंधित घरानेदार गायकों को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त समय के प्रभाव के कारण हर वस्तु में बदलाव आते हैं और वर्तमान में इश्क मिजाज़ी रूप में सूफियाना गायन का ज़्यादा प्रचलन है जिसके लिए सूफियाना गायन के अन्तर्गत सूफी परम्परा के सिद्धांतों का पालन अनिवार्य है और बदलाव के साथ–साथ वास्तविक्ता से दूर न जाया जाए। इसके लिए भविष्य में आने वाले गायक कलाकारों को अच्छे से सूफी सिद्धांतों की जानकारी होना आवश्यक है ताकि सूफियाना गायन का सही रूप जनसाधारण में प्रचारित हो।

5.1.1.2 कव्वाल जावेद इरशाद : (पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल, मलेरकोटला)

जावेद इरशाद साहिब मलेरकोटला के कव्वाल गायकों में विशेष स्थान रखते हैं। आपके घराने का कव्वाली गायन परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान है। आपके दादा रहमत कव्वाल मलेरकोटला रियासत के शुरुआती दौर के प्रसिद्ध कव्वालों में से थे। आपके दादा जी के नाम के कारण आपके घराने को रहमत कव्वाल घराने के नाम

से जाना जाता है। इसके पश्चात आपके बेटे इरशाद रहमत ने इस घराने की परंपरा को आगे चलाया जो जावेद इरशाद जी के पिताजी थे।

चित्र 5.2 : जावेद इरशाद जी कव्वाली गायन की प्रस्तुति करते हुए

जावेद इरशाद साहिब का जन्म 5 जुलाई 1958 को मलेरकोटला में हुआ। आरंभिक शिक्षा आपने अपने घराने से ही प्राप्त की और वर्तमान समय में भी यह सूफियाना गायन के अंतर्गत कव्वाली गायन प्रस्तुतियों के माध्यम से सूफियाना गायन का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। ऑल इंडिया रेडियो जब शुरू हुआ तो सूफियाना कव्वाली के प्रस्तुतीकरण करने वालों में आपके घराने के कव्वाल ही सर्वप्रथम गायक थे। जावेद इरशाद जी ने रेडियो और दूरदर्शन पर भी सूफियाना गायन की प्रस्तुतियां दी है और अपने श्रोताओं को अपनी प्रस्तुतियों से मंत्रमुग्ध किया है। इसके अतिरिक्त आपने जहाँ भारत के विभिन्न राज्यों में अपनी संगीत प्रस्तुतियां दी हैं, विदेशों में भी सूफियाना गायन का प्रचार प्रसार करते हुए मलेशिया कनाडा आदि देशों में सूफी गायन किया है। वर्तमान समय में रहमत कव्वाल घराने की परंपरा को चलाते हुए सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

शोधार्थी द्वारा की गई भेंटवार्ता के दौरान सूफियाना गायन से संबंधित पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए आपका कहना है कि इस्लाम धर्म में से उपजी सूफीमत विचारधारा के अंतर्गत सूफी फकीरों द्वारा रचित साहित्य जो खुदा या अल्लाह को संबोधित करके लिखा गया, जिसमें आवाम को ख़ुदा की इबादत संबंधी

संदेश भी दिया गया। जब इन रचनाओं को संगीत के द्वारा गायन किया गया तो सूफियाना गायन या सूफी संगीत हो गया।

सूफियाना गायन के साधनों की बात करते हुए आपका मानना है कि सूफियाना गायन के मुख्य स्त्रोत तो सूफी फकीरों के दरबार या दरगाहें हैं।

सूफी गायन विधाओं के बारे में आपके विचार हैं कि सूफियों द्वारा रचित साहित्य विभिन्न काव्या रूपों में उपलब्ध होता है जिसके अंतर्गत हमद, नाअत, मनकबत, शब्द, श्लौक, दौड़े, गंढां, काफियां, कॉल, कलाम आदि रचनाएं प्राप्त होती हैं जिनमें कव्वाली और काफी विशेष रूप में प्रचलित हैं।

चित्र 5.4 : कव्वाल जावेद इरशाद जी शोधार्थी के साथ साक्षात्कार करते हुए [1]

सूफी गायकी की विधा संबंधी बात करते हुए आप कहते हैं कि सूफी फकीरों द्वारा रचित काफियों को ख्याल अंग से भी गायन किया जा सकता है पर ज़्यादा प्रचलन अद्दर्शास्त्रीय और सुगम संगीत के अंतर्गत किया जाता है, कलाकार की क्षमता पर निर्भर करता है कि वह कलाम को किस अंदाज़ से प्रसतुत कर सकता है।

वर्तमान में कव्वाली के स्वरूप के बारे में बताते हुए कहते हैं कि कव्वाली कव्वाल लोगों का गायन अंदाज़ है। अगर सूफी फकीरों द्वारा रचित कलामों को परम्परागत ढंग से गायन किया जाए तो हम उसको कव्वाली गायन कह सकते हैं।

1. साक्षात्कार, इरशाद, जावेद, तिथि 5 मई, 2019, स्थान मलेरकोटला

अगर उसमें इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग किया जाए और किसी साधारण व्यक्ति द्वारा लिखित सूफीनुमा रचनाओं का गायन हो तो वह कव्वाली न होकर सूफीनुमा रचना होगी।

सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में पंजाब के गायक कलाकारों का विशेष योगदान है और हमारे पूर्वजों के सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार के परिणाम स्वरुप ही विभिन्न विधाओं के कलाकारों द्वारा सूफियाना रचनाओं को अपनी प्रस्तुतियों का हिस्सा बनाया गया जिसके फलस्वरूप हर वर्ग के श्रोताओं तक सूफियाना संगीत का प्रचार प्रसार हुआ और आवाम में लोकप्रियता बनी। शामचौरासी घराने के विश्व विख्यात शास्त्रीय कलाकार उस्ताद सलामत– नजाकत अली खां काफी गायक बरकत सिधू साहब का नाम विशेष है कोई भी संगीत कला या परंपरा तभी लोकप्रिय होगी जब उसका जनसाधारण में प्रचार होगा जिसमें पंजाब के कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है कि उन्होंने लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, अर्ध शास्त्रीय संगीत और सूफियाना गायन शैलियों के भिन्न–भिन्न रूपों द्वारा अपनी समझ अनुसार प्रचार प्रसार किया है जिसके फलस्वरूप सूफी परंपरा के सूफी फकीरों की रचनाएं जनसाधारण में लोकप्रिय हैं।

सूफियाना गायकी के वर्तमान में उज्जवल भविष्य के लिए आपके सुझाव हैं कि सूफी फकीरों के दरबारों पर परंपरागत रूप में कव्वाली गायन होना चाहिए, सूफी परंपरा पर आधारित सूफी संगीत से संबंधित शिक्षण संस्थाएं होनी चाहिए, सूफी परंपरा की विरासत को संभालने वाले कलाकारों को आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। देखने को मिलता है कि वर्तमान में सूफी संगीत पर पश्चिमी संगीत का प्रभाव ज़्यादा दिखने लगा है जो किसी सीमा तक सही है लेकिन सूफियाना गायन को प्रचारित करने वाले कलाकारों को चाहिए कि वे सूफी परम्परा के सिद्धांतों में रहकर ही सूफियाना गायकी का प्रसार करें।

5.1.1.3 गुलशन मीर साहब : (पंजाब के प्रसिद्ध कलाकार, जालन्धर)

गुलशन मीर जी प्रसिद्ध सूफी गायिका बीबी नूरां जी के नातिन हैं। आपके पिता का नाम स्वर्गीय उस्ताद सोहनलाल और माता स्वर्ण नूरां हैं।

चित्र 5.5 : गुल्शन मीर जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

उनके परिवार में छह सात पीढ़ियों से सूफी संगीत चलता आ रहा है। अपने सांगीतिक सफर के बारे में जानकारी देते हुए कहते हैं कि ''संगीत हमारे परिवार को विरासत में ही मिला है। मेरे पिताजी उस्ताद मास्टर सोहन लाल जी अपने समय के अच्छे गायक थे। हमारे परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी सभी गाते आ रहे हैं।''[1] गुलशन मीर जी ने अपनी ज़िन्दगी में सूफी संगीत को ही बढ़ावा दिया और साथ ही अपनी बच्चियों (नूरां बहनों) को भी इसके साथ जोड़ कर रखा। वर्तमान में नूरां बहनों का नाम सूफियाना गायन में प्रसिद्ध है। गुलशन मीर जी नूरां बहनों के पिता और गुरु भी हैं। आप श्याम चौरासी घराने और मीर आलम परिवार की संगीत परंपराओं का पालन करते हैं। आप ज्योति और सुल्ताना नूरां की संगीत रचनाओं और संगीत प्रदर्शन के लिए व्यवस्था भी करते हैं। कभी–कभी आप उनके साथ भी गाते हैं ज़्यादातर आप हरमोनियम द्वारा सूफियाना गायन में नूरां सिस्टर्स के साथ संगत करते हैं। आपका बेटा तबला वादक है। इस प्रकार आपका परिवार सूफियाना गायन परम्परा को सम्भाले हुए हैं।

साक्षात्कार भेंट के दौरान शोधार्थी द्वारा सूफी गायन से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए आपका कहना है कि सूफी से तात्पर्य है – जिसने अपना नाता उस अल्लाह के साथ, प्रेम के माध्यम से जोड़ लिया हो, वह सूफी है। सूफी

1. साक्षत्कार, मीर, गुलशन, 21.07.2019, स्थान जालन्धर

संगीत के आधार स्त्रोत के बारे में आपका मानना है कि सूफी संगीत का आधार स्त्रोत सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम ही हैं।

सूफियाना गायन की विशेषता के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि सूफियाना गायन साहित्य पर आधारित है। सूफियाना गायकी का लक्ष्य सूफी फकीरों द्वारा रचित वाणी द्वारा लोगों को अल्लाह से जोड़ना है।

चित्र 5.5.1 : गुलशन मीर जी शोधार्थी के साथ भेंटवार्ता के दौरान[1]

इसीलिए सूफियाना गायकी को ज़्यादा संगीत के कठोर नियमों में न बांधकर बांधकर सुगम संगीत के अन्तर्गत गायन किया जाता है लेकिन ऐसा नहीं है कि इसको हम केवल सुगम संगीत में ही गा सकते हैं बल्कि इस गायन को शास्त्रीय और अर्द्धशास्त्रीय विधा में भी गा सकते हैं। यह किसी भी गायक कलाकार की क्षमता पर निर्भर करता है कि वह सूफी कलामों को किस विधा के अन्तर्गत निभा सकता है।

वर्तमान में प्रचलित सूफी संगीत के बारे में आपकी राय है कि कलाकारों को जितनी समझ है, वे उसी हिसाब से गायन कर रहे हैं लेकिन फिर भी बहुत अच्छा है कि वह ऐसे ही इस परम्परा की ओर अग्रसर होते रहे तो धीरे—धीरे इश्क मिजाजी से इश्क हकीकी की तरफ बढ़ जाएंगे और सूफी फकीरों द्वारा रचित कलामों का गायन करेंगे।

---

1. साक्षात्कार, मीर, गुलशन, तिथि 21 जुलाई, 2019, स्थान जालन्धर

सूफी संगीत की विभिन्न विधाओं के बारे में आपके विचार हैं कि विभिन्न सूफी फकीरों द्वारा कलाम, काफियां, श्लोक, इश्क हकीकी से संबंधित सूफियाना रंग की रचनाएं, इसके अतिरिक्त सूफी रंग में रंगे हुए शायरों द्वारा ग़ज़लें, हमद, नाअत, मनकबत, उस अल्लाह, पीरों–फकीरों की प्रशंसा में सूफी फकीरों द्वारा रचित किया गया साहित्य आदि के आधार पर विभिन्न गायन प्रचारित हुए इनमें सबसे ज़्यादा मकबूल कव्वाली और काफी की लोकप्रियता बढ़ती गई जो कि वर्तमान में लोकप्रिय सूफियाना गायन शैलियां हैं।

सूफी संगीत की कव्वाली विधा के बारे में आपका मानना है कि कव्वाली गायन शैली का संबंध कव्वाल गायक लोगों से है जिन्होंने सूफी फकीरों द्वारा रचित कॉल या कलाम रचनाओं को गायन किया जिसे कव्वाली कहते हैं। कव्वाली गायन की शुरुआत के बारे में आपके विचार हैं कि भारत में कव्वाली की शुरुआत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, उसके बाद उनके मुरीदों द्वारा यह सिलसिला लगातार चलता रहा और अमीर खुसरो के समय में इसका प्रचलन बहुत ज़्यादा हुआ। उसके पहले भी कव्वाली की रिवायत रही लेकिन उसका स्वरूप भिन्न था जैसे कव्वाली पहले डफ पर भी होती रही और ताली से भी होती रही ऐसा बुजुर्ग लोगों का मानना है।

सूफी संगीत की काफी विधा के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि काफी सूफी संगीत की लोकप्रिय गायन शैली जिसे हम कव्वाली की तरह भी गा सकते हैं और काफी गायन के तरीके से भी गायन कर सकते हैं।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के साधनों के बारे में आपके विचार हैं कि विशेष रूप में तो सूफी फकीरों के दरबार ही सूफियाना गायन के मुख्य साधन है और इसके अतिरिक्त वर्तमान में शिक्षण संस्थान कॉलेज और यूनिवर्सिटी अपने अपने स्तर पर सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में भूमिका निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त टी. वी. चैनल्स और मीडिया आदि के माध्यम से भी आज दुनियाभर में हर इंसान अपने टैलेंट को ज़ाहिर कर रहा है। ऐसे ही कला से भरे हुए लोग जो आर्थिक तौर पर मजबूत नहीं थे जिनको मीडिया या चैनल ने दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है, सूफियाना गायकी को लोगों तक पहुंचाने में यह एक बहुत बड़ा योगदान है।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में वर्तमान पंजाब के कलाकारों के योगदान की बात करते हुए आप कहते हैं कि संगीत की कोई सीमा नहीं होती, जैसे सूफियाना

कलाम का गायन हिंदुस्तानी पंजाब में होता है वैसे ही पाकिस्तानी पंजाब में भी होता है। लेकिन शोध विषय अनुसार वर्तमान में हिंदुस्तानी पंजाब के कलाकारों की ही बात करेंगे जिन्होंने सूफी गायन के प्रचार प्रसार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। परिणामस्वरूप आज सूफियाना गायकी विश्व प्रसिद्धि हासिल किए हुए है।

सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में वरिष्ठ, युवा और महिला कलाकारों का बहुमूल्य योगदान है, हमारे वरिष्ठ कलाकारों के समर्पण का ही परिणाम है कि आज हम सूफी संगीत से जुड़े हुए हैं और हमारी युवा पीढ़ी का सूफियाना गायन की ओर अग्रसर होना इस बात का प्रमाण है कि पंजाब के कलाकारों ने सूफियाना गायिकी को प्रचारित एवं प्रसारित कर जनसाधारण को सूफियाना गायन से अवगत कराया है जिससे आज के युवा कलाकार सूफी संगीत को अपना रहे हैं, वह वरिष्ठ कलाकारों की ही देन है। इसी की भांति युवा कलाकार समय के बदलाव के अंतर्गत सूफीनुमा रचनाओं के माध्यम से शुद्ध सूफी रचनाओं से लोगों को अवगत करवा रहे हैं तो कहीं ना कहीं अपनी समझ के अनुसार वह इश्क मिजाज़ी के ढंग से लोगों को इश्क हकीकी की ओर लेकर जा रहे हैं।

महिला कलाकारों का भी उतना ही योगदान है जितना पुरूष कलाकारों का, सूफी संगीत के प्रचार प्रसार मेरा मानना है आबिदा परवीन साहब बहुत बड़ा नाम है और विश्व प्रसिद्ध कलाकार हैं जो हर तरह की सूफियाना शैलियों को प्रस्तुत करने में सक्षम हैं और वह जब गाती हैं तो एक पूरा माहौल सूफियाना महफिल जैसा बन जाता है।

सूफियाना गायकी की विरासत को भविष्य में सम्भाल कर रखने हेतु आपके सुझाव हैं कि सूफी संगीत परंपरा को जो कलाकार संभाले हुए हैं उन कलाकारों को सरकार की तरफ से आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए ताकि वह अपने घर का गुज़ारा अच्छे से कर सकें क्योंकि वह एक परंपरा को संभालने के लिए अपनी पूरी ज़िंदगी लगा देते हैं। इसके अतिरिक्त समय समय पर सूफियाना गायन की महफिल होनी चाहिए ताकि वह अपने कला को लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें जिससे सूफी परंपरा की विरासत को संभालने के लिए कलाकारों को हौसला मिलेगा। इसके साथ ही कॉलेज और यूनिवर्सिटी में विषय के रूप में सूफी गायन परंपरा की विरासत को थ्योरी और प्रयोगात्मक रूप से विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए।

सूफियाना गायन से जुड़े हुए कलाकारों को नियुक्त करना चाहिए या उनकी कार्यशालाओं (workshops) को शिक्षण संस्थाओं में आयोजित करवाना चाहिए ताकि आने वाले युवा कलाकारों को उनसे सूफी परम्परा के सिद्धांतों सम्बन्धी दिशा–निर्देश मिल सके।

5.1.1.4 पद्म श्री पूरन चंद वडाली : (पंजाब के प्रसिद्ध सूफी गायक, अमृतसर)

चित्र 5.7 : पद्म श्री पूरन चन्द वडाली जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

पंजाब की सूफी गायन परंपरा में पूरन चंद वडाली जी का महत्वपूर्ण स्थान है। आपको वडाली ब्रदर्स के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि आप अपने भाई प्यारा लाल जी के साथ अक्सर जुगलबंदी में गाते थे। आपने केवल सूफियाना गायन गायकी तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि सूफी गायन को आगे भी लेकर गए। आपका जन्म गुरु की वडाली में हुआ। यह गांव सिखों के छठे गुरु हरगोबिंद राय जी के द्वारा निर्मित है और अमृतसर से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आपके पुश्तैनी गांव के कारण ही आपको वडाली ब्रदर्स के नाम से सम्बोधित किया जाता है। आपके पिता ठाकुरदास उच्च कोटि के गवैये थे। वह शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ कव्वाली भी गाया करते थे। आपने संगीत की तालीम अपने पिताजी से ही ली। वह आपको गाना सिखाने के इच्छुक थे परंतु आप कुश्ती के शौकीन थे। आपका बेटा लखविंदर वडाली एक अच्छा गायक हैं और वह आपसे ही संगीत की बारीकियों को सीखते रहते हैं। आपने शिक्षा तो हासिल नहीं की परन्तु फिर भी आपको बहुत सी काफियाँ, कव्वालियां, कलाम और कथाएं मौखिक रूप में याद हैं। संगीत की दात आपको विरासत से ही मिली है, आपके गुरु पंडित दुर्गादास थे जो

कि पटियाला घराना के आशिक अली के शागिर्द थे। पहले पूर्णचन्द जी अकेले ही गायन करते थे और प्यारेलाल जी घुंघरू बांधकर साथ नाचते थे। परंतु उस समय जुगलबंदी का दौर था, जैसे सलामत अली–नजाकत अली, अमानत अली–फतेह अली खां आदि। उनसे प्रेरित होकन फिर आपने अपने भाई प्यारेलाल को भी सिखाना शुरू कर दिया और जुगलबंदी में गायन आरम्भ किया। श्री पूर्णचन्द वडाली जी बेगम अख़्तर की कठिन मुरकियों, उस्ताद बड़े गुलाम अली ख़ान की घुमावदार तानें, उस्ताद सलामत–नज़ाकत अली और अमानत–फतेह अली ख़ान की गायकी से बहुत प्रसन्न और प्रभावित रहे हैं। आपने हमेशा अच्छे गायन का ही प्रचार प्रसार किया, यही कारण है कि जनसाधारण आपकी गायकी के दीवाने हैं। वडाली ब्रदर्स ने शुरूआती दौर में काफी गायन से अपना सफर आरम्भ किया जो कि पंजाब की सूफी परम्परा के अन्तर्गत लोकप्रिय शैली है जिसको लोगों द्वारा सराहा भी गया। इसी समय के दौरान उस समय के जालंधर आकाशवाणी के निर्देशक श्री एन.एम. भाटिया जी थे। उन्होंने उनकी गायकी से प्रभावित होकर आपके कुछ चुनिन्दा गायन रिकॉर्ड करके रेडियो पर प्रसारित किये। पहली बार रेडियो प्रस्तुति जालंधर केंद्र के देहाती प्रोग्राम में आपका पहला काफी गायन रिकॉर्ड किया, जिसके बोल थेः

''नहीं आया मेरा मेहरम दिल दा,
सज्जना बाझो चैन नइ मिलदा,
क्यों नइ आया,
रांझे नइ सी रहना बेले खैर होवे,
झटपट पता कर नी माए,
क्यों नहीं आया''

इसके पश्चात् आपके सूफियाना गायन की प्रस्तुतियों का सिलसिला लगातार चलता रहा, देश के सभी हिस्सों में अपने गायन किया और सूफियाना गायन की अनेकों प्रस्तुतियां दी। सन् 2000 ई. में आपकी पहली ऐल्बम 'तेरे नाल प्रीतां' टी–सीरीज़ कंपनी से रिलीज़ हुई। इसके पश्चात् 2001 में 'हीर का पैग़ाम–ए–इश्क' रिलीज़ की। इसके बाद एच.एम.वी. कम्पनी ने मल्टी–सूफी ऐल्बम रिलीज़ की जिसमें आपने 'उठ गए गवांडी यार, रब्बा हून की करिए' काफी गाई। आपका सूफीनुमा कलाम 'तू माने या ना माने दिलदारा, असां ते तैनू रब्ब मन्नेया' बहुत ही लोकप्रिय है।

आपके सूफियाना गायन की लोकप्रियता के फलस्वरूप आपको बहुत से मान–सम्मान दिए गए हैं जिनमें संगीत अकादमी अवार्ड 1992, तुल्सी अवार्ड 1998, पंजाब संगीत नाटक अकादमी अवार्ड 2003 आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने आपकी सूफियाना गायिकी के प्रचार प्रसार में निभाई गई भूमिका के फलस्वरूप आपको 2005 में पद्म श्री अवार्ड से भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया और पी.टी.सी. पंजाबी चैनल की ओर से लाईफटाईम एचीवमैंट अवार्ड द्वारा 2015 में आपको सम्मानित किया गया।

साक्षात्कार भेंट के दौरान शोधार्थी को सूफी का अर्थ बताते हुए वडाली जी कहते हैं कि सूफी वह है जो अंदर से साफ है, शुद्ध है, जो सभी मानवता को एक समान समझता है और अल्लाह की इबादत में रंगा हुआ ही सूफी कहलाता है।

चित्र 5.8 : शोधार्थी पद्मश्री पूर्णचन्द वडाली जी के साथ साक्षात्कार करते हुए [1]

सूफियाना गायन की विधाओं के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि सूफी संगीत की विभिन्न विधाएं हैं, जिनका आधार सूफी फकीरों द्वारा रचित वाणी या साहित्य है जिसके अन्तर्गत बाबा फरीद जी के श्लोक, कॉल, हमद, नाअत, मनकबत हैं आदि प्राप्त होते हैं जो अपने काव्य रूप के कारण भिन्न नज़र आते हैं। इसके अतिरिक्त कव्वाली, काफी, ग़ज़ल, तराना आदि सूफी संगीत की प्रसिद्ध शैलियां है।

1. साक्षात्कार, वडाली, पूर्णचन्द, तिथि 18 मई, 2019, स्थान अमृतसर

इसी की भाँति ख़्याल शैली द्वारा भी अमीर खुसरो द्वारा रचित सूफ़ी कलाम गाए जाते हैं।

कव्वाली विधा के बारे में आपके विचार हैं कि कव्वाली कव्वाल लोगों के गायन करने का अंदाज़ है, जो सूफ़ी फकीरों द्वारा रचित साहित्य का गायन करते थे। कॉल को गायन करने वाले कव्वाल लोगों द्वारा जब गायन किया जाने लगा तो उसे कव्वाली कहा जाने लगा।

कव्वाली की ऐतिहासिक जानकारी देते हुए आप कहते हैं कि भारत में कव्वाली का प्रचलन अमीर खुसरो के समय से बहुत ज़्यादा हुआ। उससे पहले भी कव्वाली होती थी, लेकिन उसका स्वरूप भिन्न था। इसके अतिरिक्त ग़ज़ल के साहित्यिक रूप को भी इश्क मिजाज़ी और ईश्क हकीकी के अंतर्गत गायन किया जाता है।

काफी गायन सूफ़ी संगीत की विशेष शैली है जिसमें सूफ़ी फकीरों द्वारा रचित कॉफियों का गायन किया जाता है। आप सूफ़ियाना गायन की विशेषता के बारे में बताते हुए कहते हैं कि दुनिया की कोई भी विधा स्वरों से बाहर नहीं है। यह गायन करने वाले की क्षमता या तपस्या पर निर्भर करता है कि वह काफी को द्रुत ख्याल की तरह भी गा सकता है, ठुमरी अंग भी गा सकता है। सूफ़ी संगीत किसी सीमा में बंधा हुआ नहीं है। इसमें हर तरह की संगीतक बारीकियों का प्रयोग किया जाता है।

सूफ़ियाना संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों द्वारा दिए गए योगदान के बारे में आपका कहना है। कि पंजाब के कलाकारों द्वारा सूफ़ियाना संगीत का विभिन्न गायन शैलीयों द्वारा गायन किया गया। जिसके अंतर्गत पंजाब के कव्वाल गायक कलाकारों ने सूफ़ी परंपरा के परंपरागत रूप द्वारा और साधारण कव्वाली गायन द्वारा जनसाधारण को सूफ़ियाना गायन से जोड़ा। काफी गायक कलाकारों ने सूफ़ी फकीरों के काफी साहित्य के अधीन रचनाओं द्वारा प्रचार प्रसार किया और सुगम संगीत के अंतर्गत कलाकारों द्वारा सूफ़ी संगीत से प्रभावित सूफ़ीरंग की रचनाओं द्वारा प्रचार प्रसार किया गया । इसके अतिरिक्त श्रोताओं की समझ अनुसार सूफ़ियाना संगीत की प्रस्तुति रहती है ताकि जनसाधारण सूफ़ियाना संगीत को समझ सके और इश्क मिजाजी आधारित सूफ़ी रचनाओं के माध्यम से

इश्क हकीकी रचनाओं की तरफ जनसाधारण को अग्रसर करने का प्रयास किया जाता है जिसका परिणाम है कि वर्तमान में हर वर्ग का श्रोता सूफियाना संगीत से अवगत होने लगा है। जिससे स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब के कलाकारों के प्रचार प्रसार से ही संभव हो पाया कि सूफियाना संगीत की लोकप्रियता जनसंधारण में बढ़ रही है।

5.1.1.5 पद्म श्री हंस राज हंस : (पंजाब के प्रसिद्ध गायक, नकोदर)

चित्र 5.9 : पद्म श्री हंस राज हंस जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

हंस राज हंस जी का पंजाबी सूफी गायकों में अव्वल स्थान हैं जिन्होंने पंजाब में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी जाकर सूफी गायन परंपरा का प्रचार प्रसार किया है। आपका जन्म 9 अप्रैल 1963 ईस्वी को गांव सफीपुर जालंधर में हुआ, आपके पिताजी का नाम श्री अर्जुन सिंह और माता का नाम श्रीमती अजीत कौर है। आपके उस्ताद पूर्ण शाहकोटी जी हैं जिनसे आपने मौसीकी की तालीम हासिल की। हंस राज हंस जी उस्ताद जी के घर ही आबादपुरा में रहा करते थे। उस्ताद जी भी आपको अपने पुत्रों की तरह ही प्यार करते थे और उन्होंने हंस जी को पूरी लगन से सिखाया। आप उनके साथ सूफी दरबारों पर ही रहे और वहाँ उस्ताद जी के साथ सूफी दरबारों में कव्वाली गायन की प्रस्तुति करते थे। 1973 ई. में 11 साल की आयु में आपने सबसे पहले रेडियो पर बाल जगत कार्यक्रम में सूफी फकीर बुल्ले शाह की काफी 'तेरे इश्क नचाया कर थईया–रे–थईया' गाई। आपने संगीत की हर विधा पर लोकप्रियता हांसिल की। आपकी बहुत सारी ऐल्बम रिकॉर्ड हो चुकी हैं। 1992 में एच.एम.वी. कंपनी ने पंजाबी सूफी रचनाओं को रिकॉर्ड किया,

जिसमें पूरन शाह कोटी, वडाली बंधुओ आदि ने सूफी गायन किया। इसमें हंस राज हंस जी ने भी दो कलाम 'हक बाहू दमदम बाहू' (हज़रत सुल्तान बाहू) और 'उलटे होर ज़माने आए' (साईं शाह हुसैन) गाए।

एच.एम.वी. कंपनी की तरफ से 'जोगियां दे कन्नां विच्च, कच्च दियां मुंदरां' ऐल्बम रिलीज़ की गई, जिसको दर्शकों ने बहुत सम्मान दिया। इसके पश्चात् आपकी सूफियाना गायकी की लोकप्रियता इस कदर बढ़ी कि आपनें भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी सूफियाना महफिलों की प्रस्तुतियाँ दीं। इसी की भांति आपका पाकिस्तान में भी महफिल लगाने का ख़्वाब पूरा हुआ जिस धरती से नुसरत फतह अली ख़ान साहिब, नूरजहां, रेशमा, सलामत–नजाकत, जैसे फनकार हुए हैं, 14 नवंबर 1997 को आपने लाहौर स्टेडियम में सूफियाना गायन की प्रस्तुति की। वर्तमान में हंस राज हंस जी नकोदर (जालंधर) के प्रसिद्ध सूफी दरबार बाबा लाल बादशाह जी की दरगाह के मुख्य सेवादार हैं और संगत की सेवा भी करते रहे हैं। आजकल आप दरबार में सूफियाना महफिलों का आयोजन करते हैं। आपके शागिर्दों में रमेश आलम, सुखदेव साहिब, लालचंद, मास्टर सलीम आदि आपके अच्छे शागिर्द हैं।

हंस जी को बहुत से पुरस्कारों से नवाज़ा गया, पंजाब सरकार की तरफ से आपको 'पंजाब का राज गायक पुरस्कार', सन् 2002 में दिया गया। आपको लुधियाना के इंटरनेशनल कल्चरल क्लब की तरफ से 'उस्ताद नुसरत फतेह अली खान पुरस्कार' भी दिया गया। हाशिम शाह यादगारी ट्रस्ट अमृतसर की तरफ से 'शाम मोहम्मद पुरस्कार' 8 फरवरी 1998 को दिया गया। सन् 1997 को 'लोक शरीफ पुरस्कार', 'विरसे दा वारिस' पुरस्कार 1994 को, 'पंजाब की आवाज़ पुरस्कार' इण्डो कैनेडियन टाईम, कनाडा द्वारा 1994 ई. को पुरस्कार 'द ग्रेट सांग ऑफ पंजाब अवार्ड' 10 अगस्त 1997 आदि से नवाज़ा गया। इन सब पुरस्कारों के इलावा 1983 से 1987 तक आप 'एशियन सांग कंटैस्ट' में जज भी रहे। आप जी रेडियो के ग्रेड–1 कलाकार रह चुके हैं। 1998 में टिप्स कम्पनी ने आपकी ऐल्बम 'कूक पपीहे वाली' रिलीज़ की जिसमें आपने सूफियाना कलाम गए थे। संगीत के क्षेत्र में आपकी भूमिका और सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार के फलस्वरूप भारत सरकार द्वारा सन् 2008 में आपको 'पद्म श्री' पुरस्कार के साथ नवाज़ा गया।

साक्षात्कार भेंट के दौरान शोधार्थी द्वारा शोध प्रबन्ध से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए आपका कहना है कि सूफी संगीत नहीं, सूफियाना गायन होता है। सूफी संतों द्वारा रचित वाणी या कलामों का जो गायन करे, सूफियाना गायन कहलाता है।

आपका मानना है कि सूफियाना गायकी के लिए वहीं गायक काबिल है जो वजद लाने में समर्थ हो। आपका कहना है कि चाहे सीधा–साधा गाओ, मगर सुर में गाओ।

चित्र 5.10 : शोधार्थी पद्मश्री हंस राज हंस जी के साथ साक्षात्कार करते हुए [1]

सूफी गायन की काफी विधा के बारे में बात करते हुए आप बताते हैं कि काफी सूफियाना रंग की बहुत लोकप्रिय सिन्फ (शैली) है, जिसको विभिन्न विधाओं के कलाकारों ने अपनाकर सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्याम चौरासी घराने से सम्बन्धित शास्त्रीय गायक सलामत अली साहब का नाम विशेष है, जिन्होंने काफी को ठुमरी अंग से गायन किया। लोक गायक कलाकारों ने अपने अंदाज़ में प्रस्तुत किया जो कि काफी गायन की लोकप्रियता का प्रमाण है। काफी की लोकप्रियता के फलस्वरूप विभिन्न भाषाओं के आधार पर इस शैली के विभिन्न नामकरण भी हुए जैसे मुल्तानी काफी, सिंधी काफी, पंजाबी काफी, पहाड़ी काफी आदि।

---

1. साक्षात्कार, हंस, राज हंस, तिथि 20 जुलाई, 2019, स्थान लाल बादशाह दरबार, नकोदर, जालंधर.

कव्वाली गायन शैली के बारे में आपने बताते हुए कहते हैं कि कव्वाली गायन शैली को अगर परंपरागत रूप में गायन किया जाए तो वही कव्वाली कहलाएगी और उसमें सूफियाना रंग की रचनाएं कॉल या कलाम सिद्धांतों के अनुसार गायन किए जाएं तभी हम कव्वाली कहेंगे वर्तमान में कव्वाली में जो बदलाव आ रहे हैं वह किसी हद तक ठीक हैं लेकिन परंपरागत रूप को भी साथ में लेकर चलना चाहिए, अगर कव्वाली में सूफियाना रंग की रचनाएं नहीं है तो वह इश्क मिजाज़ी से संबंधित कव्वाली कहलाएगी।

सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार के साधनों की बात करते हुए आपका विचार है कि विशेष रुप में तो सूफी फकीरों की दरगाहें ही सूफियाना गायन के स्त्रोत हैं लेकिन शिक्षण संस्थाएं भी विष्य के रूप में अपने–अपने स्तर पर योगदान दे रही हैं। इसी की भांति टी.वी. चैनलस, मीडिया इत्यादि भी सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में विशेष भूमिका निभा रहे हैं।

सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में पंजाब के कलाकारों के योगदान के बारे में आप बताते हैं कि सूफियाना गायन में पंजाब के कलाकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है जिसके अंतर्गत कव्वाली करने वालों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे गायकों के खानदान व घराने हैं जिन्होंने बुल्ले शाह रचित सूफी कलाम ही गाए, ऐसे ही हीर गाने वाले पीढ़ी दर पीढ़ी गायक हुए है। ऐसे ही सैफ उल मलूक गाने वाले गायक भी हैं। पंजाब के सूफी गायक कलाकारों की बात करते हुए आप कहते हैं कि दीना कव्वाल, मुबारक अली, फतेह अली, पूर्ण शाह कोटी, बरकत सिद्धू, उनके पिता साईं निरंजन दास जी, राहोंवाल जी, वडाली ब्रदर्स आदि के नाम विशेषणीय हैं।

युवा कलाकार जो सूफी रंग से प्रभावित रचनाएं गाते हैं वह सूफी कलाम नहीं है। सूफी फकीरों द्वारा रचित वाणी को जो गाए, वही सूफी कलाम है।

सूफी गायन के उज्जवल भविष्य के लिए आपके सुझाव हैं कि सरकार को सूफियाना कलाम गायन करने वालों को आर्थिक सहायता देनी चाहिए, शैक्षणिक संस्थाओं में दूसरे विष्यों की भांति सूफी संगीत से संबंधित शाखा बननी चाहिए ताकि वहां पर सूफी परंपरा और सिद्धांतों से विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अवगत कराया जा सके।

5.1.1.6 हरमेश रंगीला : (पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल, बलाचौर, नवांशहर)

चित्र 5.11 : श्री हरमेश रंगीला जी कव्वाली गायन करते हुए

हरमेश रंगीला जी सूफियाना संगीत जगत की कव्वाली परम्परा के अधीन एक लोकप्रिय कव्वाली गायक हैं। आपने संगीत के सफर का आरंभ शास्त्रीय संगीत की विद्या हासिल करके किया। गायकी की बुनियाद शास्त्री संगीत होने के कारण आपने गायन की हर विधा का प्रचार–प्रसार किया। आपका जन्म सियाना नामक गाँव, नवाँशहर, ज़िला शहीद भगत सिंह, में 1 मार्च 1956 को हुआ आपके पिता का नाम भगत राम और माता दिलीप कौर है।

आपने पीरों फकीरों की दरगाहों पर जाकर सूफियाना गायकी के अन्तर्गत कव्वाली गायन शैली का गायन आरंभ किया। आप अच्छे गायक होने के साथ–साथ अच्छे शायर भी हैं। आपने बहुत सारी सूफी रचनाएँ खुद कलमबद्ध कीं और फिर उन्हें रिकार्ड भी करवाया, जैसे कि 'तर गईयां जी पीरां दीयां तारिया', 'बहि जा गौंस दे द्वार', 'पीर दे जो दर बहि गया', 'तोते ने उड़ जाना', 'लैला दी गली वल चल घड़िया' आदि।

आपकी सूफियाना गायकी की लोकप्रियता के फलस्वरूप ही आपने प्रसिद्ध दरगाहों जिनमें दरबार मंडाली शरीफ, दरबार डेरा बाबा मुराद शाह जी, कुंडे बाली सरकार, लम्बा गांव जालंधर, पीर निगाहे वाला, दरबार बाबा माधो शाह जी, शाम चौरसी आदि दरगाहों के नाम विशेषनीय हैं, में प्रस्तुतियाँ की। इसके अतिरिक्त

आपने पंजाब के इलावा भारत के अन्य राज्यों में भी गायन करके श्रोताओं का दिल जीता। आपने गायकी के साथ–साथ गुरु शिष्य परंपरा को भी जारी रखा। आपके शागिर्द संगीत जगत में अच्छा नाम कमा रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपके शिष्य अच्छे कीर्तन रागी भी हैं जिनमें करनैल सिंह, त्रिलोचन सिंह रागी आदि बहुत बढ़िया कीर्तनकार रहे हैं। आपके सुपुत्र और सुपुत्री इसी परंपरा के साथ जुड़े हुए हैं और सुफियाना संगीत में उच्च स्तरीय अकादमिक शिक्षा भी हांसिल कर रहे हैं। जिससे पुष्टि होती है कि हरमेश रंगीला जी का शास्त्रीय संगीत, गुरमति संगीत और सूफी संगीत जगत में अहम योगदान है।

चित्र 5.12 : शोधार्थी श्री हरमेश रंगीला जी के साथ साक्षात्कार करते हुए [1]

साक्षात्कार भेंट के दौरान शोधार्थी द्वारा सूफी गायन से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए हरमेश रंगीला जी का कहना है कि सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। आप कहते हैं कि जो रचनाएं या गायन शैलियां लोगों तक पहुंचेंगी ही नहीं तो वह जिंदा कैसे रहेंगी तो कलाकार अपने बुजुर्गों से सीखी हुई गायन शैलियां, जिसमें सूफियाना गायकी पंजाब के बुजुर्ग कलाकारों द्वारा प्रचारित होते हुए वर्तमान में लोगों तक पहुँची हैं। अगर किसी भी विधा का गायन स्वरूप आवाम तक पहुँचेगा ही नहीं तो उसका प्रसार कम हो जाएगा और उस शैली को ज़िंदा रखने के लिए कलाकारों की अहम

1. साक्षात्कार, रंगीला, हरमेश, तिथि 20 दिसम्बर, 2018, स्थान बलाचौर, नवाँशहार

भूमिका है जिससे गायन की विभिन्न शैलियां वर्तमान में प्रचार में हैं। सूफियाना गायन का वर्तमान में प्रसिद्धि हासिल करना ही प्रत्यक्ष प्रमाण है पंजाब के कलाकारों का जिन्होंने विभिन्न संगीतक विधाओं के माध्यम से सूफियाना गायन शैलियों का प्रचार प्रसार किया है।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के साधनों के बारे में आपके विचार हैं कि विशेष रूप में सूफी फकीरों के दरबार ही सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के मुख्य साधन हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षण संस्थाओं और गैर–शिक्षण संस्थाओं ने भी सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है।

5.1.1.7 शौकत अली दीवाना : (पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल, पटियाला)

चित्र 5.13 : शौकत अली दीवाना जी कव्वाली गायन करते हुए

शौकत अली दीवाना कव्वाली गायन के क्षेत्र में अपना अहम स्थान रखते हैं। आपको संगीत विरासत में मिला। आपके पिता जी मघ्घर अली दीवाना पटियाला घराने से संबंधित कव्वाली कलाकार थे जिन्हें लोग मघ्घर सिंह दीवाना कहकर बुलाते थे जोकि पंजाब और पाकिस्तान पंजाब के गवैय्यों में विशेष स्थान रखते थे। आपके परिवार से सम्बन्धित युवा कलाकार पंजाब की सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में भिन्न–भिन्न शैलियों के माध्यम से अपनी भूमिका निभा रहे हैं जिसमें कमल खान, नवनीत खान आदि शामिल हैं।

साक्षात्कार भेंट के दौरान शोधार्थी द्वारा सूफी गायन से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए शौकत अली दीवाना जी का कहना है कि सूफी शब्द से

तात्पर्य सत्य, हक की बात करने वाले फकीर सूफी है जिन्होंने उस अल्लाह को महबूब समझकर इश्क हकीकी की बात की।

सूफी संगीत की विधाओं के बारे में आप कहते हैं कि सूफी संगीत की विभिन्न विधाएं हैं जो सूफी फकीरों द्वारा रचित काव्य की विभिन्न रचनाओं पर आधारित है जिसमें कव्वाली और काफी विधाओं ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है, कव्वाली एक समूह गायन है जिसमें साहित्य के रूप में सूफियाना ग़ज़ल, श्लोक, हमद, कॉल, कलबाना, मनकबत आदि कव्वाली के अन्तर्गत गायन किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त काफी काव्य रूप को भी कव्वाल लोग कव्वाली शैली में गायन करते हैं।

चित्र 5.14 : शोधार्थी शौकत अली दीवाना जी के साथ साक्षात्कार करते हुए [1]

कव्वाली गायन शैली के बारे में आपका विचार है कि कव्वाली, कव्वाल गायकों का गायन अदांज है, जिसका गायन एक समूह में किया जाता है। कव्वाल लोगों ने सूफी फकीरों द्वारा लिखित कॉल कलामों को अपने अंदाज़ में गायन किया जो कव्वाली कहलाया।

कव्वाली की इज़ाद के बारे में आप कहते हैं कि पहले कव्वाली डफ पर होती थी और परम्परागत अंदाज़ से गाई जाती थी लेकिन ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

1. साक्षात्कार, दीवाना, शौकत अली, तिथि 6 मई, 2019, पटियाला

जी जब भारत आए तो उस वक्त कव्वाली का प्रचार प्रसार अच्छे ढंग से होने लगा इसी के साथ ही अमीर खुसरो ने कव्वाली के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाई।

कव्वाल बच्चों के घराना के बारे में आपके विचार हैं कि जिस तरह शास्त्रीय संगीत के वर्तमान में घराने देखने को मिलते हैं उसे की भांति कौल गाने वालों के भी विभिन्न घराने थे जो बाद में धीरे–धीरे शास्त्रीय संगीत या ख्याल गायन की तरफ आ गए। सूफी संगीत की विशेषता के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि ख्याल की उत्पत्ति संबंधी विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कोई भी विधा किसी एक रूप से प्रभावित नहीं होती इसके लिए हम ऐसे नहीं कह सकते कि यह केवल शास्त्रीय संगीत या सूफिज़्म से ही निकली है, बहुत से सांगीतिक तत्वों का समावेश किसी विधा में शामिल होता है।

सूफियाना गायन में काफी विधा के बारे में आपका कहना है कि काफी विधा पंजाब में उद्भव हुई। यह लोकप्रिय गायन शैली है और साथ में काव्य रूप में भी उपलब्ध होते हैं। काफी को पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों के गायक कलाकारों द्वारा अपनाए जाने के कारण काफी शैली को भाषा के आधार पर और भी नाम प्रचलित हुए जैसे सिंधी काफी, मुल्तानी काफी, पहाड़ी काफी, पंजाबी काफी।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों के योगदान संबंधी आपके विचार हैं कि सूफी फकीरों द्वारा रचित सूफी काव्य या रचनाओं को विभिन्न गायन शैलियों द्वारा गायन कर पंजाब के कलाकारों ने सूफी परंपरा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया।

पंजाब की सूफियाना गायकी का लक्ष्य ख़ुदा की इबादत पर आधारित है और सूफियाना गायन से संबंधित कलाकार सूफियाना नियमों के अनुसार इश्क मिजाज़ी के द्वारा इश्क हकीकी में रंगने वाली सूफीनुमा रचनाओं का गायन करके आवाम को सूफियाना गायकी से जोड़ने का कार्य बाखूबी से कर रहे हैं।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के साधनों की बात करते हुए आप कहते हैं कि दरगाहें, निजी सूफी महफिलें, संगीत मुकाबला (रियालिटी शो), मीडिया के अन्तर्गत टी.वी. चैनल्स पर चलने वाले संगीत के कार्यक्रमों में सूफी ज़ोन्स द्वारा सूफियाना गायकी से लोगों को अग्रसर किया जा रहा है।

सूफियाना गायकी के अच्छे भविष्य के लिए शौकत अली दीवाना जी कहते हैं कि जो सूफी परंपरा के गायक हैं और सूफी कलाम ही गाते हैं सरकार को उनको आर्थिक मदद देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कॉलेज और विश्वविद्यालय में सूफी संगीत को दूसरे विषयों की भातिं विशेष स्थान मिलना चाहिए ताकि सभी लोग इस परंपरा से जुड़ सकें। पंजाब में प्रचलित सूफियों की दरगाह पर गायक कलाकारों के लिए कुछ सिद्धांत रखने चाहिए और जो उन सिद्धांतों का पालन करता है उसी को वहां पर कार्यक्रम करने की अनुमति होनी चाहिए।

5.1.2 युवा कलाकार :

पंजाब के वरिष्ठ कलाकारों ने जहां एक तरफ अपनी सारी ज़िंदगी सूफियाना गायन के लिए समर्पित की है वहीं उनकी सच्ची संगीत प्रति लगन के भांति ही उनसे प्रेरित होकर संगीत जगत की प्रसिद्ध विभूतियों ने सूफियाना गायन को प्रचारित एवं प्रसारित कर विश्वविख्यात किया है और सूफियाना गायन को अपनी ज़िंदगी का लक्ष्य मानने वाले कलाकारों का अनुसरण करते हुए पंजाब के युवा कलाकार सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिसके अंतर्गत मास्टर सलीम, लखविंदर वडाली, बिल्ला कव्वाल, बंटी कव्वाल, फिरोज़ खान, सरदार अली, गुलाम अली–शौकत अली, आबिद हुसैन, नवनीत खान, कमल खान, नूरां सिस्टर्स, जी खान, सरताज, ममता जोशी, कंवर ग्रेवाल, आदि कलाकारों के नाम वर्णनीय है। जिसके अंतर्गत कुछ चयनित पंजाब के प्रसिद्ध युवा कलाकारों के साथ शौध कार्य सम्बंधी हुई वार्तालाप को प्रस्तुत किया गया है जिसका निम्नलिखित वणृन इस तरह है।

5.1.2.1 सरदार अली : (पंजाब के प्रसिद्ध युवा कव्वाल, मलेरकोटला)

सरदार अली सूफियाना गायकी से सम्बन्धित मतोई घराना के युवा कलाकार हैं जो वर्तमान में सूफियाना गायकी के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आपका जन्म 24 सितंबर 1973 ईस्वी को मतोई गांव जिला संगरूर में हुआ। यह गांव मलेरकोटला शहर से 4–5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस

गाँव की विशेषता ही है कि यह गाँव सूफी गायकों के कारण ही जनसाधारण में प्रसिद्ध हुआ। पीढ़ियों से आपका परिवार सांगीतिक विधा से जुड़ा हुआ है। आपके पिता उस्ताद मजीद खान अच्छे गायक थे। कव्वाल शौकत अली–मतोई जी, जो कि आपके बड़े भाई पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाली गायक हैं। बचपन से ही सांगीतिक माहौल में पले–बढ़े।

चित्र 4.15 : सरदार अली जी कव्वाली गायन करते हुए

सरदार अली जी का रुझान संगीत की तरफ बचपन से ही था। आपने स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों में कई संगीतक मुकाबले जीते। आपने ऑल इंडिया फॉक मुकाबले में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। अपने संगीत सफर के शुरुआती दौर में आपका रुझान कमर्शियल संगीत में ज़्यादा रहा, परंतु बाद में कुछ समय के पश्चात् आपने सूफी संगीत की तरफ अपना रुख किया और कव्वाली को दिल से चुना और काफी शोहरत हासिल की। आप सूफी संगीत के अंतर्गत ही लोगों में पसंद किये जाने लगे, साईं मुराद शाह जी, साईं लाडी शाह जी के दरबार में पंजाबी गायक गुरदास मान जी के साथ कई बार स्टेज शो किए और श्रोताओं द्वारा सम्मान भी हासिल किया। आपने सूफी रंगन के अनेकों कलाम या गीत श्रोताओं की झोली में डाले। आपने पंजाबी चित्रपट में भी बाबा फरीद के श्लोकों को कव्वाली रूप में गायन किया जो कि बहुत पसंद किया गया।

साक्षात्कार भेंट के दौरान शोधार्थी द्वारा सूफियाना गायन से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए सरदार अली जी कहते है कि सूफी से तात्पर्य है कि सूफी शब्द फकीरी से उत्पन्न हुआ शब्द है। ऐसे लोग जिन्होंने उस परवरदिगार अल्लाह ईश्वर के लिए अपना सब कुछ त्याग कर उसकी ईबादत में अपने आप को रंग लिया और अपनी जिंदगी का लक्ष्य उस अल्लाह की इबादत को बनाया, वही वास्तव में सूफी है।

चित्र 5.16 : शोधार्थी सरदार अली जी के साथ साक्षात्कार दौरान[1]

सूफी फकीरों द्वारा रचित सूफी कलाम ही सूफियाना गायन का आधार है जिसमें ईश्क हकीकी की बात की जाती है। सूफी गायकी के बारे में आपका कहना है कि बेशक आज के समय में कमर्शियल संगीत को ज़्यादा पसंद किया जाता है परंतु सूफी संगीत या सूफी गायकी भी कमर्शियल गायकी से कम नहीं है अगर कोई भी गायक परम्परागत रूप में सूफियाना गायन को निभाने में सक्षम होगा तो महज़ ही दर्शकों द्वारा उसकी गायकी को दिल से प्रवान किया जाएगा। सूफियाना गायकी ऐसी गायकी है जिसमें श्रोतागण हर तरह के भावों का अनुभव कर सकता है।

सूफी संगीत की विभिन्न विधाओं के बारे में आपके विचार हैं कि सूफी फकीरों द्वारा रचित काव्य में विभिन्न तरह के विषय मिलते हैं जिसके अंतर्गत हमद्, नाअत, कॉल, कलबाना, मनकबत, दौहड़े, बाबा फरीद के श्लोक आदि प्राप्त होते हैं।

1. साक्षात्कार, अली, सरदार, तिथि 23 दिसम्बर, 2018, स्थान मलेरकोटला

सूफी फकीरों द्वारा रचित विभिन्न काव्य को गायक कलाकारों द्वारा निबद्ध एवं अनिबद्ध रूप में गायन किया गया जिसमें कव्वाली और काफी गायन विधा मुख्य रूप में प्रचलित हुई। कव्वाली कव्वाल गायकों के गायन का अंदाज़ है जिसे एक समूह में गायन किया जाता है। दूसरी तरफ काफी गायन जिसके गायन का अंदाज़ कव्वाली से भिन्न है लेकिन वर्तमान में काफी विधा को भी कव्वाली विधा के अनुसार गायन किया जाता है।

सूफियाना गायन की विशेषता के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि सूफियाना गायन में हर विधा का प्रभाव है और गायक की क्षमता पर निर्भर करता है। वह चाहे तो सूफी साहित्य को ख्याल, ठुमरी, लोक गायकी अंग से गायन कर सकता है जिसकी पुष्टि प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा गाई हुई रचनाओं से होती है। वर्तमान में प्रचलित सूफी संगीत के बारे में बताते हुए कहते हैं कि वर्तमान में सूफियाना गायन के अधीन सूफीनुमा रचनाओं का प्रचलन बढ़ गया है। यही कारण है कि आज के समय में चित्रपट जगत में भी इसको विशेष स्थान प्राप्त है। जिस किसी चित्रपट में अगर सूफियाना गायन शामिल किया जाता है तो वह सूफीनुमा गायन दर्शकों में चर्चा का विषय जरूर बनता है और उनको श्रोताओं द्वारा कबूल भी किया जाता है। जैसे कि पहले ही बताया गया है कि सूफी कलाम या सूफीनुमा रचना को रूह से निभाया गया हो, समय और दर्शकों को ध्यान में रखते हुए सूफी संगीत में आधुनिक समय का रंगन भी दिया जाता है बस वह रंगन सूफीनुमा और श्रोताओं को अच्छी दिशा देने वाला होना चाहिए।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के साधनों के बारे में आपके विचार हैं कि सूफियाना गायन का मुख्य स्त्रोत सूफी फकीरों द्वारा संस्थापित दरबार या दरगाहें है। इसी तरह टी.वी. चैनल और मीडिया सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में साधन के रूप में अहम भूमिका निभा रहे हैं। जिन कलाकारों के पास टैलेंट है, वह सोशल मीडिया के माध्यस जैसे यू–ट्यूब आदि द्वारा अपने हुनर को श्रोताओं के सामने रख सकता है।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों के योगदान के बारे में बताते हुए आप कहते हैं कि वर्तमान पंजाब के कलाकारों का सूफियाना गायकी को प्रचार प्रसार करने में विशेष महत्व है, जहां पश्चिमी पंजाब के कलाकारों ने सूफी

परंपरा की विरासत को संभाला हुआ है दूसरी तरफ पूरबी पंजाब के कलाकारों द्वारा सूफियाना गायकी को विश्व प्रसिद्धि के चरम तक पहुँचाया गया गया है।

आपके अनुसार सूफी संगीत की परंपरा की विरासत को संभालने के लिए कुछ प्रमुख कदम उठाने चाहिए। जैसे शिक्षण संस्थानों में दूसरे विषयों की भांति सूफी परम्परा से संबंधित विषय होने चाहिए ताकि लोगों को वास्तविकता में सूफिज़्म की जानकारी हो सके। इसके अतिरिक्त सूफी परम्परा से संबंधित शिक्षकों को भर्ती किया जाए ताकि सूफी परंपरा की सही दिशा विद्यार्थियों को मिल सके, सूफी परंपरा से जुड़े हुए कलाकारों को आर्थिक सहायता सरकार की तरफ से मिलनी चाहिए, विभिन्न सम्मेलनों की तरह सूफी परंपरा से संबंधित समय–समय पर सूफी सम्मेलन होने चाहिए और जिसमें सूफी परंपरा से जुड़े हुए विरासती कलाकारों को आमंत्रित किया जाए।

5.1.2.2 फिरोज़ खान : (प्रसिद्ध पंजाबी युवा कलाकार, पटियाला घराना)

चित्र 5.17 : फिरोज़ खान जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

फिरोज़ खान पंजाब के ऐसे गायक हैं जिन्होंने पंजाबी संगीत जगत के साथ–साथ बॉलीवुड में भी अपना विशेष स्थान बनाया है। यह पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल शौकत अली मतोई जी के शागिर्द है। फिरोज़ खान ने अपना संगीतक सफर अपने गुरु की रहनुमाई से सूफियाना गायन के द्वारा आरंभ किया। सूफियाना गायन कला सभी कलाओं का मिश्रण है। जिसके अंतर्गत शास्त्रीय संगीत, अर्द्धशास्त्रीय और सुगम संगीत की सभी कलाओं का समावेश मिलता है जिसके

कारण सूफियाना गायन का कलाकार संगीत की किसी भी शैली को बखूबी निभा सकता है। यही कारण है कि फिरोज़ खान ने सूफियाना तालीम की वजह से संगीत के माध्यम से जहां इश्क मिजाज़ी वाले रंगन के नगमों को गाया, वहीं सूफीनुमा नगमों के साथ श्रोताओं में लोकप्रियता भी हासिल की।

शोधार्थी द्वारा शोध प्रबन्ध के आधार पर साक्षात्कार के दौरान आपने बताया कि सूफी से तात्पर्य है 'सत्या'। अर्थात् सत्या का नाम सूफी है।

सूफी संगीत को आधार स्रोत के बारे में आपका कहना है कि सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम ही सूफी गायन का आधार है जिसमें सूफी फकीरों ने लोगों को सत्य का पैगाम दिया।

चित्र 5.18 : शोधार्थी फिरोज़ खान जी के साथ साक्षात्कार दौरान[1]

सूफी संगीत की विभिन्न विधाओं के बारे में आपका विचार है कि विशेष रुप में तो कव्वाली और काफी ही सूफी गायन की मुख्य विधाएं हैं और इसके साथ ही विभिन्न सूफी रचनाओं को क्वाली के अंतर्गत एक नियम में गायन किया जाता है। सूफी संगीत की कव्वाली विधा के बारे में आपका मानना है कि कव्वाली गायन कव्वाल लोगों का गायन है जिन्होंने सूफी फकीरों द्वारा रचित कौल को गायन किया। कव्वाली गायन समूह गायन है जिसमें गायन के साथ ताली का प्रयोग लय को बांधने के लिए किया जाता है।

1. साक्षात्कार, खान, फिरोज़, तिथि 21 जुलाई, 2019, स्थान फगवाड़ा

कव्वाली के ऐतिहासिक आरम्भ के बारे में आपके विचार हैं कि भारत में कव्वाली का प्रचार प्रसार चिश्ती संप्रदाय के सूफी फकीरों द्वारा हुआ जिनमें अमीर खुसरो साहब का नाम विशेष है।

सूफी संगीत की विशेषता के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि सूफी फकीरों ने इश्क हकीकी आधारित अपनी रचनाओं को संगीत के माध्यम से लोक गायन शैलियों के रूप में सूफीमत का प्रचार किया, तो कह सकते हैं कि सूफीमत का प्रचार प्रसार लोक अंग से ज़्यादा प्रचलन में आया। यही कारण था के सूफियाना गायन के लिए शास्त्रीय संगीत के कठोर नियमों का पालन नहीं किया जाता, इसके अतिरिक्त सूफियाना गायन भी शास्त्रीय संगीत के बिना अच्छा नहीं हो पाता सूफियाना गायन में ख्याल भी है, ठुमरी भी है, क्वाली भी है, काफी भी है। तो कह सकते हैं कि हर कलाकार की क्षमता कितनी है वह उसी हिसाब से सूफियाना गायन का प्रस्तुतीकरण करेगा।

सूफियाना गायन के माध्यमों सम्बन्धी बात करते हुए आप कहते हैं कि सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के साधन विशेष रूप में सूफी फकीरों की दरगाहें ही हैं।

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों के योगदान के बारे में बात करते हुए आप कहते हैं कि गायक कलाकारों द्वारा किताबों में लिखे हुए साहित्य को जब प्रस्तुत किया जाता है, तब ही वह लोगों तक पहुँचता है, यह सूफियाना संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। इसी की भातिं सूफी गायन का आधार भी सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम हैं, जिसको पंजाब के कलाकारों ने लोगों के समक्ष रखा। कोई भी साहित्य जनसाधारण तक पहुंचेगा तो ही वह प्रचलित होगा तो कह सकते हैं कि पंजाब के कलाकारों ने विभिन्न विधाओं के माध्यम से सूफियाना गायन को विश्व प्रसिद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में वरिष्ठ कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है जिनमें पदम्श्री पूर्णचंद्र वडाली, उस्ताद पूर्ण शाहकोटी, उस्ताद बरकत सिद्धू साहब, उस्ताद शौकत मतौई साहब, मोहम्मद शरीफ कव्वाल, करामत फकीर, मोहम्मद तकी कव्वाल, आदि ऐसे बहुत से गायक कलाकार हुए हैं, जिन्होंने सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम का गायन करके सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी की भांति सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में महिला कलाकारों का भी

महत्वपूर्ण योगदान है जिनमें हमारे पास आबिदा परवीन जी का नाम प्रत्यक्ष रूप में आता है। ऐसे ही वर्तमान में युवा कलाकारों में नूरा सिस्टर्स का नाम विशेष है। इसी की भांति पंजाब में उनसे प्रेरणा लेकर बहुत से महिला युवा कलाकार सूफी कलाम का गायन करने लगे हैं।

सूफी संगीत परंपरा की विरासत को संभालने के लिए अपने सुझावों के बारे में बताते हुए कहते हैं कि दूसरे विष्य की भातिं भक्ति संगीत के अंतर्गत सूफी परंपरा का विषय भी साथ में जोड़ना चाहिए ताकि भजन संगीत, गुरमत संगीत आदि की भांति ही सूफियाना गायन को विषय के रूप में विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए क्योंकि सूफी संगीत भी भारतीय संगीत परंपरा का विशेष अंग बन गया है।

5.1.2.3 शौकत अली और गुलाम अली : (प्रसिद्ध युवा कव्वाल, मलेरकोटला)

चित्र 5.19 : शौकत अली और गुलाम अली जी कव्वाली प्रस्तुत करते हुए

सूफियाना गायन की कव्वाली परंपरा के अंतर्गत युवा कलाकारों में शौकत अली और गुलाम अली का अपना विशेष स्थान है। यह दोनों बंधु अपने बुजुर्गों द्वारा दी गई सूफियाना गायन परंपरा की विरासत आगे बढ़ा रहे हैं और सूफियाना गायन परंपरा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये प्रसिद्ध कव्वाल करामत फकीर के सुपुत्र हैं। शौकत अली और गुलाम अली की विशेषता यह है कि यह कव्वाली गायन परंपरागत विरासत को वर्तमान में संभाले हुए हैं और परंपरा के अनुसार कव्वाली गायन प्रस्तुत करते हैं।

शोधार्थी द्वारा शोध कार्य संबंधी पूछे गए प्रश्नों के अधीन सूफी संगीत के बारे में बताते हुए कहते हैं के सूफियाना संगीत उस परम सत्य ईश्वर अल्लाह की इबादत में रंगे हुए सूफी फकीरों की देन है जो जनसाधारण को इश्क हकीकी की ओर अग्रसर करता है और जो अल्लाह ताला की सिफ्त सलाह में गायन किया जाए जिसमें आवाम इश्क हकीकी के रंग में रंगी जाए सूफियाना गायन कहलाता है।

सूफियाना गायन की शुरुआत के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि सूफियाना गायन की शुरुआत भारत में प्रसिद्ध सूफी फकीर ख्वाजा मोइनुद्दीन साहब के आने से शुरू हुई जिसे महफिल ए समाअ के रूप में सूफियाना गायन किया जाता रहा। उपरांत अमीर खुसरो द्वारा सूफियाना संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया परिणाम स्वरूप कव्वाली गायन का प्रचार प्रसार उसी वक्त से वर्तमान तक महफिल ए समाअ के रुप में प्रवाहित है।

चित्र 5.20 : शोधार्थी शौकत अली और गुलाम अली जी के साथ साक्षात्कार दौरान[1]

सूफियाना संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों के योगदान के बारे में बताते हुए कहते हैं कि सूफी संतों,फकीरों द्वारा इश्क हकीकी आधारित रचित

1. साक्षात्कार, अली, शौकत और अली, गुलाम तिथि 05 जून, 2019, स्थान मलेरकोटला

वाणी है।जिसे पंजाब के कलाकारों द्वारा प्रचारित कर लोकप्रिय एवं प्रसिद्धि तक पहुंचाया गया। किसी भी कला का प्रचार अगर नहीं होगा तो उस गायन से आवाम परिचित नहीं हो पाएगा।वर्तमान में सूफियाना गायकी विश्व प्रसिद्धि हासिल किए हुए है जिसमे पंजाब के गायक कलाकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जहां पुरुष कलाकारों का सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में अहम योगदान है उसी की भांति पंजाब की महिला कलाकारों ने भी विशेष भूमिका निभाई है हमारे पूर्वज गायक कलाकारों की सूफियाना गायन के प्रति समर्पण के परिणाम स्वरुप ही वर्तमान में असंख्य युवा कलाकार और महिला युवा कलाकार भी सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में अपनी विशेष भूमिका निभा रहे हैं और सूफियाना गायकी का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में लोक गायक कलाकारों, अर्ध शास्त्रीय गायक कलाकारों, शास्त्रीय गायक कलाकार द्वारा भी सूफियाना रचनाओं को अपनी प्रस्तुतियों में शामिल कर प्रचारित किया जा रहा है जो कि सूफियाना गायकी की लोकप्रियता का प्रमाण है जिसका श्रेय पंजाब के गायक कलाकारों को जाता है।

सूफियाना गायकी के प्रचार हेतु माध्यमों की बात करते हुए कहते हैं मुख्य रूप में सूफी फकीरों की दरगाहों ने विशेष भूमिका निभाई है और वर्तमान में टेक्नोलॉजी के विभिन्न माध्यमों का सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है जिसके अधीन कंप्यूटर इंटरनेट टीवी चौनल्स ,सोशल मीडिया आदि द्वारा सूफियाना गायन विश्व ख्याति हासिल किए हुए हैं।

सूफियाना गायन के विभिन्न शैलियों की बात करते हुए शौकत अली जी कहते हैं के सूफियाना काव्या पर आधारित विभिन्न तरह की गायन रूप प्रचलित हैं जिनमें कव्वाली एवं काफी विशेष हैं। कव्वाली समूह गायन है और काफी सोलो गायन है। लेकिन वर्तमान में काफी गायन कवाली के अंतर्गत भी गायन किया जाता है।

5.1.2.4 मास्टर सलीम : (प्रसिद्ध पंजाबी युवा कलाकार, जालंधर)

मास्टर सलीम पंजाब के युवा कलाकारों में अहम स्थान रखते हैं और उस्ताद पूर्ण शाह कोटी जी के सुपुत्र हैं। आपने अपनी सूफियाना गायकी की तालीम अपने घर से ही प्राप्त की और पहली बार दूरदर्शन जालंधर से सूफियाना रचना के द्वारा अपने सांगीतिक सफर की शुरुआत की।

चित्र 5.21 : मास्टर सलीम जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

मास्टर सलीम ने जहां सूफियाना गायकी के अंतर्गत कव्वाली और काफी का गायन किया वहीं इश्क मिजाज़ी नुमा रचनाओं को अपनी आवाज़ देकर श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त चित्रपट में भी आपने अपनी आवाज़ दी। मास्टर सलीम को संगीत की हर शैली की गहरी समझ है जिसके परिणामस्वरूप आप संगीत की हर विधा को निभाने में सक्षम है। वर्तमान में सूफियाना संगीत परंपरा की बात करते हुए कहते हैं

''मास्टर सलीम के अनुसार परिवर्तन सृष्टि का नियम है जिसका प्रभाव संगीत परंपरा में भी देखने को मिलता है वर्तमान में पंजाब की सूफियाना संगीत परंपरा विश्व प्रसिद्ध हासिल किए हुए हैं जो कि पंजाब की संगीत परंपरा एवं पश्चिमी संगीत के मिश्रण के परिणामस्वरुप ही संभव हो पाया है''[1]

1. कसेल, नवजोत, सामाजिक विज्ञान पत्र, पृ. 257

''सूफियाना गायकी की बात करते हुए कहते हैं कि मुझे निजी रूप में सूफियाना गायन से ही सुकून मिलता है सूफी फकीरों के दरबारों या सूफी स्थलों पर सूफियाना गायकी का प्रचार प्रसार करना ही मेरा वास्तविक धर्म है''[1]

आप राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूफीनुमा रचनाओं के माध्यम से सूफियाना गायकी का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। उनकी सूफियाना गायन के अधीन सैंकड़ों रचनाएँ लोकप्रिय हैं जैसे 'फकरां दी कुली विच रब वसदा', 'चरखे दी घूक', 'रक्खनाा लाज दर आयां दी' बुल्ला कहंदा ऐ, अज्ज होना दीदार माही दा, माहीआ, नसीबा, सांई तेरे नाम के दीवाने हो गए, इको रब आदि।

5.1.2.5 लखविंदर वडाली : (प्रसिद्ध युवा पंजाबी कलाकार, अमृतसर)

चित्र 5.22 : लखविंदर वडाली जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

वडाली परिवार से संबंधित युवा कलाकार लखविंदर वडाली का नाम भी पंजाब के युवा कलाकारों में लोकप्रिय है। आप अपने बुजुर्गों द्वारा सूफियाना गायन की विरासत को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में सूफियाना गायकी का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। जहां आप सूफियाना गायन की गहरी समझ रखते हैं वहीं संगीत की विभिन्न गायन शैलियों पर आपका विशेष अधिकार है। फलस्वरुप सूफियाना गायन के परंपरागत कलामों की भांति ही श्रोताओं को सूफीनुमा रचनाओं के माध्यम से सूफियाना गायन से जोड़ रहे हैं। क्योंकि सूफियाना गायन का लक्ष्य आवाम को इश्क मिजाज़ी से इश्क हकीकी की ओर लेकर जाना है। ''सूफी फकीरों द्वारा रचित कलाम और सूफीनुमा रचनाओं की प्रस्तुती युवा कलाकार लखविंदर वडाली द्वारा

1. कसेल, नवजोत, सामाजिक विज्ञान पत्र, पृ. 257.

इस अंदाज से की जाती है कि सूफियाना गायकी से सम्बंध ना रखने वाला श्रोतागण भी सूफियाना गायन का आनंद प्राप्त करता है''[1]। आपकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'चरखा', 'कमली रमली', 'मैं ता पीनी आ', 'चूरी' मौला, मैं लज्जपालां दे लड़ लग्गी आं आदि हैं।

5.1.2.6 खान साहिब : (प्रसिद्ध युवा कलाकार, फगवाड़ा)

चित्र 5.23 : खान साहिब जी कव्वाली गायन की प्रस्तुति करते हुए

सूफियाना गायन परंपरा के वर्तमान में विश्व प्रसिद्ध और लोकप्रियता होने का ही परिणाम है कि वर्तमान में नए युवा कलाकार जो गायन क्षेत्र में अपना पांव जमा रहे हैं। चाहे ऐसे युवाओं ने अपना संगीतक सफर सुगम संगीत से शुरू किया हो लेकिन वर्तमान में वह इबादतनुमा सूफियाना गायन से ऐसे जुड़े हुए हैं कि सूफियाना संगीत के विद्वान या सूफियाना संगीत जगत की हस्तियां इन्हें सूफियाना कलाकारों की भांति ही संबोधित करते हैं जो ऐसे युवा कलाकारों की सूफियाना गायन के प्रति अग्रसर होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है जिसके अंतर्गत वर्तमान में सूफियाना गायन परंपरा को आगे बढ़ाने वाले कलाकारों की श्रेणी में ख़ान साहिब का नाम बड़े अदब से लिया जाता है

''हमारे वरिष्ठ कलाकारों द्वारा सूफियाना गायकी के प्रचार–प्रसार एवं जनसाधारण में सूफियाना गायकी की लोकप्रियता का ही प्रभाव है कि खान साहब

1. साक्षात्कार, सागर, प्रेम, तिथि 12 जून, 2019, जालन्धर

जैसे युवा कलाकार हमारे समक्ष है''[1] इसी की भांति ''खान साहब बहुत ही मंझा हुआ कलाकार है जिस पर उस अल्लाह ईश्वर की रहमत है जो हर तरह की गायकी में सक्षम है और सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जिस से प्रेरित होकर नए युवा कलाकार एवं श्रोतागण सूफियाना गायकी से अवगत हो रहे हैं''[2]

5.1.2.7 विनीत खान : (युवा कलाकार, कव्वाली गायक, पटियाला)

चित्र 5.24 : विनीत खान जी कव्वाली गायन की प्रस्तुति करते हुए

कव्वाली गायक कलाकारों की श्रेणी में युवा कव्वाली कलाकार गायक विनीत खान का नाम भी विशेषनीय है विनीत खान प्रसिद्ध बॉलीवुड युवा कलाकार कमल खान के बड़े भाई हैं। विनीत खान कव्वाली गायन परम्परा के साथ जुड़े हुए हैं और कव्वाली गायन के लिए प्रसिद्ध हैं। कव्वाल शौकत अली दीवाना अनुसार ''कव्वाली सूफीयाना गायन ऐसी इबादतनुमा गायकी है जिसके लिए कलाकार को केवल गायकी की ही समझ होना काफी नहीं है बल्कि गायकी के साथ–साथ दिल से भी खुदा या अल्लाह ताला से इश्क होना चाहिए तभी उसकी गायकी में सूफियाना रंगत आएगी वैसी ही बात विनीत खान की गायकी में देखी जा सकती है''[3]

''विनीत खान वर्तमान युवा कवाली गायक कलाकारों में अपना अहम स्थान बनाए हुए हैं कव्वाली सूफियाना गायकी की विशेष गायन शैली है जिसमें तार

1. साक्षात्कार, शर्मा, राजेश, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, 15 मई 2019, अमृतसर
2. साक्षात्कार, मिश्रा, अरूण, तिथि 15 नवम्बर, 2018, जालन्धर,
3. साक्षात्कार, दीवाना, शौकत अली, तिथि 6 मई, 2019, पटियाला

सप्तक का प्रयोग ज्यादा होता है ऐसे ही गायकी की विशेषता विनीत खान के गायन में देखी जा सकती है क्योंकि किसी भी गायन विधा के लिए गायक कलाकार का कंठ उस विधा के अनुकूल हो तो वह गायक कलाकार उस विधा को अच्छे से निभा सकता है।''[1] अंतः सूफियाना गायन पंजाब की मिट्टी की अमीर सांगीतिक परंपरा है जो हमारे बुजुर्गों से वर्तमान तक चली आ रही है जिसका अनुसरण करते हुए पंजाब के युवा कलाकार सूफियाना गायन परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं

5.2 सूफीयाना गायन के प्रचार–प्रसार में महिला कलाकारों का योगदानः

संगीत के हर क्षेत्र में जहाँ पुरूषों ने उचित स्थान व मान–सम्मान हासिल किया है वहीं संगीत के क्षेत्र में महिलाओं का भी अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शुरू से ही नारी जाति कोमलता के प्रतीक संगीत के प्रति आकर्षित रही है। इसका प्रमाण पुरातन ग्रन्थों में भी मिलता है। जहाँ भी संगीत का वर्णन मिलता है वहीं स्त्री को भी गायन, वादन और नृत्य से जुड़ा हुआ पाया गया है। संगीत के क्षेत्र में महिलाएं अपनी कला के कारण समाज में सम्मान की हकदार रहीं हैं। पंजाब की महिला कलाकारों ने उच्च कोटि के संगीतक गुणीजनों से संगीत की शिक्षा पाप्त की लेकिन शिक्षा के साथ–साथ स्त्रीयों को आरम्भ से ही अपनी कला में निपुणता हासिल करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा। इन स्थितियों में भी कुछ महिला कलाकारों ने संगीत क्षेत्र को चुना जो उस समय के समाज में मन्जूर नहीं था। परन्तु फिर भी साहसी महिलाओं ने संगीत की दुनिया में संघर्ष के फलस्वरूप लिए कदम उठाया और समाज की बातों का जवाब अपनी कला द्वारा दिया और संगीत की सभी विधाओं के अतिरिक्त सूफी परम्परा की इबादत रूपी गायकी के प्रचार–प्रसार मे अहम भूमिका निभाई।

सूफी संगीत के प्रचार–प्रसार में जहाँ पंजाब के कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है वहीं पंजाब की महिला कलाकारों ने इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिनमें बीबी नूराँ, सईदा बेगम, सर्व्ण नूराँ, आबिदा परवीन, नूराँ सिस्टर्स,

---

1. साक्षात्कार, मोहन, राजेश, 13 नवम्बर, 2018, फरीदकोट

मनप्रीत अख़्तर, ममता जोशी, आदि महिला कलाकारों के नाम विशेष हैं। शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत पंजाब प्रदेश की महिला कलाकारों द्वारा सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाई है और निभा रहीं हैं जिसका वर्णन इस तरह है :

5.2.1 बीबी नूराँ : (प्रसिद्ध सूफी कलाकार, जालन्धर)

पंजाब की वरिष्ठ महिला कलाकारों में फकीरी स्वभाव की मलिका बीबी नूरां जी का नाम बड़े अदब से लिया जाता है जिन्होंने सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दीया ।उनके द्वारा गायन किए गए सूफी फकीरों के कलाम वर्तमान में भी प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हैं।

चित्र 5.24 : बीबी नूराँ जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

बीबी नूरां जी का जन्म जालंधर के नजदीक पड़ते गांव सूरजमल कोटला में हुआ ।बचपन से ही बीबी नूरां जी की रूह में संगीत समाया हुआ था जिसे पहचान कर संगीतक उस्ताद गुलाम मोहम्मद जी ने उनकी कला को निखारा और संगीत की बारीकियों से अवगत करवाया। बीबी नूरां जी की आवाज में एक पुकार थी जो हर संगीत कलाकार एवं श्रोता जनों को मंत्रमुग्ध करती।प्रोफेसर राजेश मोहन जी अनुसार ''बीबी नूरां जी पूरबी पंजाब में सूफियाना गायन करने वाले शुरुआती दौर

की महिला गायक कलाकारों की श्रेणी में आती है उनके द्वारा गायन किए गए सूफी कलाम वर्तमान में भी प्रसिद्धि एवं लोकप्रियता हासिल किए हुए हैं''[1]

उनकी आवाज प्रसिद्ध शख्सियत जगत सिंह जग्गा जी के कानों में पड़ी तो उन्होंने जालंधर दूरदर्शन के निर्देशक एन. एम. भाटिया से बीबी नूरा जी की गायकी के बारे में बात की तो उन्होंने बीबी नूरां जी को जालंधर दूरदर्शन पर गायन करने का अवसर प्रदान किया। जिसके कारण उनकी प्रसिद्धि और भी बढ़ती गई । ''इसी की भांति बीबी नूरां जी की सूफियाना आवाज एचएमवी कम्पनी के अहमद जहीर के पास पहुंची तो उन्होंने बीबी नूरां जी के गायन की पूरी एल्बम करवाई।''[2] आपकी आवाज़ में पुरूषों की आवाज़ की भांति भारीपन था और आपकी गायन शैली में आलाप और शेयरो–शायरी ज़्यादा रहती थी। आपके गायन के समय केवल एक तबला वादक और एक हरमोनियम वादक रहता था परन्तु फिर भी आपकी गायकी में सुकून और रूह इतना होता था कि हर श्रोता सूफी माहौल में बंधकर रह जाता था। आपके प्रसिद्ध सूफी 'कलाम अल्लाह हू दा आवाज़ां आवे', 'कुल्ली विच्चों नी यार लभ लै', 'कुल्ली राह विच्च पाइ असां तेरे' आदि लोकप्रिय सूफी कलाम हैं। आपको सूफी गायिका के साथ–साथ पंजाब की लोक गायिका भी माना गया। आपने पंजाब के बहुत सारे लोक गीत भी गाए। परन्तु आपकी गायकी की सबसे विलक्षण पहचान सूफियाना गायकी ही रही है।

5.2.2 मनप्रीत अख़्तर : (प्रसिद्ध लोक व सूफी गायिका, श्री मुक्तसर साहिब)

मनप्रीत अख़्तर का नाम भी सूफियाना गायकी में बड़े अदब और सम्मान का धारणी है। आपने गायकी की सभी शैलियों के अनुकूल अपनी आवाज़ को ढालते हुए सूफियाना संगीत में एक अलग पहचान बनाई है। ''गायिका मनप्रीत जी को गायकी विरासत में मिली मनप्रीत जी की गायकी की विशेषता इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि 13 साल की आयू में ही उनको प्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफी साहब के साथ गायन करने के लिए कहा गया''[3]

1. साक्षात्कार, मोहन, राजेश, 13 नवम्बर, 2018, फरीदकोट
2. घुगयाणवी, निंदर, संगीत संसार दीयां अभुल यादां, पृ.97
3. प्रीतइंदर कौर, सामाजिक विज्ञान पत्र, पृ 253.

चित्र 5.25 : मनप्रीत अख़्तर जी सूफ़ियाना कलाम की प्रस्तुति करते हुए

मनप्रीत अख़्तर जी को लोक गीत, शास्त्रीय संगीत गायन शैली और सूफ़ी गायन शैली में मुहारत हासिल थी। गायिका मनप्रीत जी ने अपने कॉलेज की शिक्षा के दौरान युवा संगीतक मुकाबलों में हिस्सा लिया और "Queen of Youth Festival"[1] का आवार्ड प्राप्त किया। आपने लोकगीतों के अन्तर्गत जहाँ पंजाबी काव्य साहित्य की विभिन्न शैलियों जैसे बोलियाँ, घोड़ियाँ, सुहाग व लोकगीत गाए वहीं सूफ़ी संगीत को चुनते हुए सूफ़ी संगीत को ही अपना संगीतिक पेशा बनाया और सफलतापूर्वक निभाया।

सूफ़ियाना गायन शैली में मनप्रीत अख़्तर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि आपकी आवाज़ बहुत ही सधी हुई होने के कारण आपके तार सप्तक के स्वरों पर अच्छी पकड़ थी। आपके गले की मुरकियाँ, खटके, गमक बहुत ही साफ स्पष्ट ढंग के साथ होते थे जो कि आपकी गायकी में चार चाँद लगाने का काम करते थे। आप जब भी कोई कलाम शुरू करतीं तो ईश्क हक़ीकी आधारित रचना ज़रूर गातीं। स्टेज पर आपके बोलने का अंदाज़ श्रोतागण का मन लुभा लेता था। आप सादे पहरावे और सादे स्वभाव के साथ बैठकर जब अपनी पेशकारी देती तो अपनी गायकी के अंदाज़ से बड़े–बड़े उस्ताद लोगों और श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करने की क्षमता रखती थीं।

---

1. प्रीतइंदर कौर, सामाजिक विज्ञान पत्र, पृ 253.

आपने सूफियाना गायकी के अधीन पंजाब की प्रसिद्ध दरगाहों में उर्स के मौके में भी अपनी प्रस्तुतियाँ दी। आपने नकोदर के प्रसिद्ध मेले 'मेला बापू लाल बादशाह' में अपनी बेहतरीन प्रस्तुति से सूफी व लोक गायक हंस राज हंस जी का भी मन जीता । आपने सूफियाना गायन शैली के अन्तर्गत कव्वाली, काफी, ग़ज़ल गायन विधाओं को बाखूबी ढंग से निभाया। आपके गाए हुए प्रसिद्ध कलाम 'तेरे इश्क नचाया', 'दमा—दम मस्त कलंदर', 'मेरे साईं दे दरबार जेहा दूजा न जग्ग ते कोई', 'माये नी मैं कीहनू आखां दर्द विछौड़े दा हाल', 'नी रांझा जोगड़ा बन आया', आदि लोकप्रिय हैं।

5.2.3 सईदा बेगम : (प्रसिद्ध सूफी कलाकार, जालन्धर)

सईदा बेगम सूफी परम्परा से जुड़ी हुई पंजाब की महिला कलाकारों में विशेष स्थान रखतीं हैं। आप सूफियाना गायन की क्षमता रखने वाली, अपनी तेजस्वी व शानदार आवाज़ के द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाली और श्रोताओं को भगवान का दर्जा देने वाली सकारात्मक सोच की गायिका है। सूफियाना गायन शैली में सईदा बेगम जैसी बुलन्द आवाज़ बहुत कम सुनने को मिलती हैं। आपकी गायकी का अपना एक अलग ही अन्दाज़ है।

चित्र 5.26 : सईदा बेग़म जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

आपकी आवाज़ पुरूषों की भांति भारी होने के अतिरिक्त तार सप्तक के स्वरों में भी आवाज कभी फीकी नही पडती़ है। आपने अपनी सूफियाना गायकी में कव्वाली, ग़ज़ल, काफी तीनों रंगों का प्रयोग किया है। आपके गले में से मुरकियाँ, स्वर का लगाव, आलाप का ढंग, आपकी गायन शैली की विशेषताओं को प्रकट

करता है। सईदा बेगम की सबसे बड़ी खासियत यह है कि आप स्वयं हारमोनियम बजाकर स्टेज पर अपना गायन प्रस्तुत करतीं हैं। जितनी आपकी गायकी कमाल की है उतना ही हरमोनियम निभाना भी कमाल है। आपका स्वरबद्ध शेयर बोलने का अन्दाज़ ही श्रोताओं को लुभा जाता है और आपकी आवाज़ में एक पुकार झलकती है। आपने अपनी गायन शैली में तानों की बजाय आलाप के इस्तेमाल के साथ–साथ तिहाई, लय का प्रयोग अधिक किया जो आपके गायन में चार चाँद लगा देते हैं। आपके गाए हुए सूफियाना कलाम 'राह तकन्ने पै गए राहियां दे', 'आजा सज्जणां तैनू दिल वाजां मारदा', 'मैं रज्ज–रज्ज पावां लुड्डियां', 'मेरा सोहणां सज्जन घर आया', 'नैन नैनां दी फकीरी विच विहि गए यार दा नज़ारा वेख के', 'वे जोगिया', 'साडी गली आ', 'वे मैं तेरे जोगिया' आदि हैं जिनको श्रोताओं ने खूब पसन्द किया।

5.2.4 ममता जोशी : (प्रसिद्ध पंजाबी महिला युवा कलाकार, फिरोज़पुर)

पंजाब की युवा सूफी महिला कलाकारों में ममता जोशी जी का अहम स्थान है। संगीतक सफर पर चलते–चलते ममता जोशी को अहसास ही नहीं हुआ कि आपका ध्यान ग़ज़ल, गायकी और शास्त्रीय गायन से हटकर कब सूफियाना गायन और सूफी काव्य की तरफ रूख कर गया।

चित्र 5.27 : ममता जोशी जी सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

शास्त्रीय संगीत की अच्छी समझ होने के कारण ममता जोशी को राग, ताल की जानकारी काफी अधिक है जिसकी झलक आपकी गायकी में देखी जा सकती

है। आपने जहां लोक गायकी, शास्त्रीय संगीत, ग़ज़ल गायकी का गायन किया वहीं सूफियाना गायकी के अन्तर्गत कव्वाली और काफी गायन विधाओं को भी बाखूबी निभाया। सूफियाना गायकी में इतनी प्रसिद्धि प्राप्त हासिल करने के पीछे ममता जोशी का कहना है कि ''सूफियाना गायकी में वडाली बंधुओं का सबसे बड़ा योगदान है जिन्होंने उनको सूफियाना गायकी की बारीकियों को सिखाया''[1]

आपकी गायकी में सुकून, रूहानियत और रागदारी की झलक स्वाभाविक ही मिल जाती है। आपके प्रसिद्ध सूफीनुमा कलाम 'कमली देया साईंयां', 'मंग लवो या फकीर', 'तू किहड़ा रब्ब हो गया', 'दुनिया रंग बिरंगी', 'ना जोगी दियां ना जोगी रह गए', 'दमादम मस्त कलन्धर' आदि है।

''ममता जोशी को सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाने के फलस्वरुप राजधानी कलरतन अवार्ड, सरस्वती अवार्ड आदि से नवाजा गया इसके अतिरिक्त विदेशों में भी अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुए''[2]

5.2.5 नूरां बहनें : (पंजाब की प्रसिद्ध महिला युवा कलाकार, जालन्धर)

नूरां बहनों की सूफी गायन शैली में एक विलक्षण पहचान है। संगीत जगत में दोनो बहनों की सूफियाना गायकी को जनसाधारण द्वारा खूब सराहा गया।

चित्र 5.28 : नूराँ सिस्टर्स सूफियाना गायन की प्रस्तुति करते हुए

1. शर्मा, जगमोहन, सामाजिक विज्ञान पत्र, पृ. 260
2. वही. पृ 264

आपने शुरू से ही सूफियाना गायकी को चुना क्योंकि आपको अपने परिवार से ही सूफियाना गायकी विरासत में मिली।

प्रो. प्रेमसागर अनुसार ''वर्तमान में व्यापारिक संगीत की चुनौतियों के विपरीत नूरां सिस्टरस द्वारा सूफियाना संगीत परंपरा के प्रचार प्रसार के फलस्वरूप युवा महिला श्रोताजनों द्वारा सूफियाना रचनाओं को श्रवण किया जाने लगा और महिला युवा कलाकारों द्वारा सूफियाना रचनाओं को अपनी प्रस्तुतियों में शामिल किया जाने लगा जो कि बहुत सराहनीय बात है।''[1] आपके सूफियाना गायन की विशेषता है कि आप सबसे पहले शेयरो शायरी को स्वरबद्ध करके पेश करती हैं। इसके पश्चात् तानों, आलाप का अधिकतम प्रयोग करती हैं। तार सप्तक में आलाप लेना और लय के साथ खेलना आपकी गायकी की एक अलग विशेषता है। कव्वाली की प्रस्तुति के समय आपकी ताली मारने की कला आपको दूसरे कलाकारों से अलग करती है। आपने बुल्ले शाह जी के कलाम, शाह हुसैन आदि सूफी फकीरों के कलामों को गायन के रूप में बाखूबी निभाया है। आप दोनों बहनों की आवाज़ सूफियाना गायन शैली के अनुकूल है। आपकी गायन शैली में सदैव सरगमों की प्रयोगता होती है और हावभाव भी सूफी रंगन में रंगे होने के कारण आप हमेशा ही मंच पर कुछ खास पेश करतीं हैं। आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह है आप दोनों बहनें जुगलबंदी में सूफियाना गायन की प्रस्तुत करती हैं। आपकी सूफियाना गायन की प्रस्तुति के अल्फाज़ बहुत ही बढ़िया होते हैं और आपकी कम्पोज़िशन भी श्रोताओं को बहुत लुभाती है। नूरां बहनों में ज्योति नूरां गायन में विशेष भूमिका निभाती है। आपके गले की मुरकियों, गमक, सरगम, आकार विशेष रूप में तैयार है जिससे आपकी संगीतक साधना का अनुमान लगाया जा सकता है कवाल शौकत अली दीवाना अनुसार ''सूफियाना गायकी में नूरां सिस्टरस का बहुत बड़ा नाम है जिन्होंने पुरुष गायक कलाकारों की भांति सूफियाना गायकी में लोकप्रियता हासिल की और यह साबित कर दिया कि सूफियाना परंपरा की भावपूर्ण एंव जोरदार गायकी में युवा महिला कलाकार भी निभाने में सक्ष्म हैं''[2]आपके प्रसिद्ध सूफियाना कलाम 'अल्लाह हू दा आवाज़ा आवे', 'तेरियां तू जाणे', 'मैं किहनू किहनू दसां', 'बुल्ला नचिया इश्क दे

1. साक्षात्कार, सागर, प्रेम, तिथि 12 जून, 2019, जालन्धर
2. साक्षात्कार, दीवाना, शौकत अली, तिथि 6 मई, 2019, पटियाला

साज़ां ते', 'कुल्ली राह विच्च अब लगन लग्गी की करिये', 'मुँह आई बात न रहन्दी' आदि प्रसिद्ध सूफियाना कलाम श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किए और वर्तमान में सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में सैंकड़ों युवा महिला कलकारों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई हैं। अतः सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में युवा महिला कलाकारों में आप महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

5.3 सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में सूफी ढाड़ी कलाकारों का योगदानः

पंजाब की संगीत परंपरा में प्रचलित लोक संगीत के विभिन्न गायन रूपों के अधीन ढाडी गायन कला अपना विलक्षण एवं विशेष स्थान रखती है ढाड़ी गायन कला के अधीन सिक्ख ढाड़ी एवं लोक ढाडी गायक कलाकार आते हैं। सिक्ख ढाड़ी गायक कलाकारों द्वारा सिक्ख इतिहास का प्रचार प्रसार किया जाता है और लोक ढाडी गायक कलाकारों द्वारा पंजाब की विरासत में ऐतिहासिक वीर गाथाओं, प्रेम गाथाओं एवं सूफी परंपरा के साहित्य को अपने गायन द्वारा प्रचारित प्रसारित किया जाता है। लोक ढाडी गायक कलाकार ग्रामीण सभ्याचार एवं संस्कृतिक अवसरों, ग्रामीण महफिलों, सूफी फकीरों के भिन्न–भिन्न स्थानों पर जाकर अपनी प्रस्तुतियों करते हैं। इन कलाकारों के फकीराना गायन अंदाज, सरल स्वभाव एवं लोक संगीत आधारित धुनों में प्रस्तुत सूफियाना कलामों के प्रचार प्रसार के फल स्वरुप ग्रामीण जनसाधारण में सूफी परंपरा के प्रति लोकप्रियता बढ़ने के कारण जनसाधारण लोक ढाडी गायक कलाकारों को सूफी ढाडी गायक कलाकारों के नाम से संबोधन करते हैं। पंजाब के प्रसिद्ध सूफी ढाडिओं का सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में योगदान का वर्णन इस प्रकार है

5.3.1 ईदू शरीफ : (सूफी ढाडी, पटियाला)

सूफी ढाड़ी गायन कला को उच्च स्तरीय पहचान एवंम लोकप्रियता हासिल कराने और राष्ट्रपति आवार्ड से सनमानित ईदू शरीफ सूफी ढाड़ी कलाकारों में उच्च कोटि के ढाडी गायक हैं। आपका जन्म 1947 में गांव ललौढा तहसील नाभा जिला

पटियाला में हुआ। आपके पिता पीदु खां अपने समय के प्रसिद्ध मुसलमान ढाडियों में से थे और गायकी के समय दो सारंगिया बजाकर अपनी कला प्रदर्शन करते थे। आपको गायकी विरासत में ही मिली।

चित्र5.29 :ईदू शरीफ जी सूफी ढाडी गायन के अन्तर्गत सूफियाना कलाम की प्रस्तुति करते हुए

आपको बचपन से ही गाने का शौक था और बचपन से अपने पिताजी से ढाडी गायन की शिक्षा लेनी आरंभ कर दी। आपने ढाडी गायन शैलियों का गहराई से अध्ययन किया। आपने अपने भतीजे मुरली खान और सुपुत्र नुसरत अली खान के साथ मिलकर एक ढाडी जथा बनाकर अलग–अलग राज्यों में प्रस्तुतियाँ देनी आरम्भ कीं। दिल्ली राष्ट्रीय मेले में भी आपने अपनी ढाडी गायन कला से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। आपको राजीव गांधी जो उस समय के प्रधानमंत्री थे, से विशेष सम्मान भी हासिल हुआ। इसके पश्चात आपने विदेशों में भी कई प्रस्तुतियाँ दी जहाँ आपने सूफी कलामों के अतिरिक्त पंजाब की लोक–गाथाओं का भी गायन किया जैसे हीर–रांझा, सस्सी–पुन्नू, मिर्ज़ा–साहिबां, पूर्ण भगत, दुल्ला भट्टी, आदि। इसके अतिरिक्त आपने सूफी फकीरों के कलामो को ग्रामीण सांस्कृतिक मेलों में बाखूबी प्रचारित किया। ईदू शरीफ जी अक्सर ही सूफी संतों की दरगाहों या उर्स के मौके पर अपनी प्रस्तुतियाँ देते थे। आपके प्रसिद्ध कलामों में 'उठ गए गुआढों यार रब्बा हुन की करिए', 'बुल्लेया रब्ब दा की पाणा इधरो पुटणा उधर लाणा' आदि। आपने सूफियाना कलामों के अतिरिक्त सूफीनुमा रचनाओं का गायन भी किया जो श्रोताओं द्वारा सराहा भी गया जैसे 'ज़िन्दगी दे रंग सज्जणां, अज्ज होर ते कल नू होर' विशेष हैं। ढाडी गायन परंपरा के प्रचार–प्रसार के आपके योगदान के परिणामस्वरूप

आपको बहुत से मान सम्मान दिए गए। ''ईदू शरीफ सभ्याचारक केन्द्रों द्वारा देश के अलग–अलग राज्यों में अपनी लोक कला की पेशकश करते हुए, देश की राजधानी दिल्ली के राष्ट्रीय मेलों तक पहुंच गए। इस प्रोग्राम में ईदू शरीफ जी ने जब आलाप लिया तो आपकी हेक (लंबी आवाज़ी) इतनी लम्बी थी कि श्रेतागण वाह वाह कर उठे। उस समय के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी ने पंजाब की ढाडी गायन परम्परा की विशेष सराहना की।''[1] आपको बहुत से मान–सम्मान व पुरस्कारों से नवाज़ा गया जिनमें 'उत्सव 1986, दिल्ली', 'उत्सव 1992, मुंबई (महाराष्ट्र)', 'इंटर स्टेट अवार्ड 1993', 'मेला मेलियां दा अवार्ड 2003' आदि वर्णनीय हैं। आपका पूरा परिवार ही ढाडी गायन परंपरा से जुड़ा हुआ है और वर्तमान में आपके सुपुत्र सूफी ढाडी परंपरा को आगे लेकर जा रहे हैं।

हाल ही में 7 जनवरी 2020 को ईदू शरीफ जी लम्बी बीमारी से लड़ते हुए इस संसार को छोड़कर प्रभू चरणों में विलीन हो गए। आपने मनीमाजरा (चन्डीगढ़) स्थित अपने निवास स्थान पर अपनी अन्तिम सांस ली। सूफियाना ढाडी गायन द्वारा सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में आपके महत्वपूर्ण योगदान को संसार हमेशा याद रखेगा और आने वाले ढाडी परम्परा के गायक कलाकारों को दिशा निर्देश मिलते रहेंगे।

5.3.2 देसराज लचकाणी : (सूफी ढाडी, पटियाला)

सूफी ढाडी देसराज लचकाणी जी का जन्म 1946 में पिता माधव दास के घर गांव लचकाणी, ज़िला पटियाला में हुआ। ढाडी संगीत की आरंभिक शिक्षा आपने अपने पिता से ही प्राप्त की। शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता होने के साथ–साथ आप अनेकों वाद्यों को बजाने में भी महारत रखते हैं। अपने पिता जी के अतिरिक्त आपने अपने उस्ताद घीचर शाह दयालगढ़ से भी संगीत की शिक्षा हासिल की जो मुस्लिम ढाडी होने के साथ–साथ ढाडी राग के अच्छे जानकार भी थे। ''अपने आरम्भिक जीवन के बारे में बताते हुए लचकाणी जी कहते हैं कि हम मीर आलम भाई मरदाने जी के ख़ानदान में से हैं। मेरा पहला नाम ताज मुहम्मद था। हमारे

1. थूही, हरदियाल, पंजाबी लोक ढाडीकला, पृ. 149

पूर्वजों ने अपनी जन्म भूमि त्यागने की बजाए मन की सन्तुष्टि के लिए दीन बदल लिया और मेरा नाम देसराज रख दिया।''[1]

चित्र 5.30 : देसराज लचकाणी जी सूफियाना ढाडी गायन की प्रस्तुति करते हुए

सन् 1993 में देसराज लचकानी जी ने अपना सांगीतिक सफर शुरू किया और अपना ढाडी जथा बना लिया। आपने कई मेलों व अखाड़ों में गाया। ''सब से पहले 'डकाले संगतां दे टिल्ले' प्रोग्राम पर अपनी ढाडी गायन कला की प्रस्तुति दी। घड़ाम पीर भीखम शाह जी की मज़ार पर लगते उर्स के समय, मीरां जी के मेलों से चलकर देसराज रायेमल माजरी, कल्लर भैणी के दशहरे, छपार, जरग आदि मेलों से होते हुए पंजाबी भवन, लुधियाना में लगते प्रो. मोहन सिंह सभ्याचारक मेलों तक पहुंचे।''[2] सूफी गायन में आपने हज़रत पीर दस्तगीर गौंस–ए–आज़म बगदाद, बुल्ले शाह और शेख़ फरीद की रचनाओं को अपनी आवाज़ देकर उत्सव मुकाबलों में प्रस्तुत किया और कई मान–सम्मान भी हासिल किये जैसे 'रेड क्रॉस सम्मान, पटियाला', 'शिरोमणि ढाडी, भाषा विभाग 1998, पटियाला', 'प्रोफेसर मोहन सिंह मेला सम्मान', 'ढाडी सोहन सिंह शीतल अवार्ड', 'शिरोमणि ढाडी लोक गायक अवार्ड' आदि प्रमुख हैं। आपने हिंदी चित्रपट में भी अपनी आवाज़ दी। सन! 2013 में कोक स्टूडियो में आपके द्वारा सूफीनुमा कलाम 'अल्लाह वाहेगुरु बोल प्यारे भवसागर तर जायेंगा' बहुत ही प्रसिद्ध हुआ जो लचकानी साहिब की ढाडी सूफी परम्परा द्वारा सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में योगदान का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

1. थूही, हरदियाल, पंजाबी लोक ढाडीकला, पृ. 145
2. थूही, हरदियाल, पंजाबी लोक ढाडीकला, पृ. 146

5.3.3 ढाडी अरमान अली : (सूफी ढाडी, लचकाणी)

वर्तमान समय में सूफी ढाडी कलाकारों में ढाडी अरमान अली जी छोटी उम्र के प्रसिद्ध कलाकार बनकर उभरे हैं। आपका जन्म 1991 में गांव लचकाणी पिता सुरजीत खान के घर माता धर्मजीत जी के घर हुआ। घर में संगीत में माहौल होने के कारण आपको बचपन से ही गाने का शौक पैदा हो गया। शौक को कला में बदलने के लिए आपने ढाडी देसराज लचकाणी जी को अपना गुरु बनाया और इस कला की तालीम हासिल की। 23 वर्ष की उम्र और गायकी के छोटे से सफर के दौरान आपको कई मान–सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिनमें 'कवि श्री छज्जू सिंह यादगारी लोक संगीत मेला, नंदलाल, पटियाला', 'लोक साहित्य और सभ्याचार मंच, नाभा, पटियाला', 'लोक साहित्य सभ्याचार मंच नाभा द्वारा 2010 में विशेष सम्मान', 'पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के युवक मेला द्वारा 2012 में विशेष सम्मान' आदि शामिल हैं।

5.3.4 दीदार सिंह शीतल : सूफी ढाडी, रोपड़

आपका जन्म 1969 में गांव सोलखीयां, ज़िला रोपड़ में हुआ। बचपन से ही आपका रूझान संगीत की तरफ था। ढाडी गायन परंपरा से जुड़ने के लिए आपने कड़ी मेहनत की और अपने उस्ताद गुरबख्श सिंह जी से संगीत की तालीम हासिल की। ढाडी संगीत गायन में निपुणता हासिल करने के लिए आपने पंजाब के प्रसिद्ध उत्सवों एवं मेलों में जाकर कई नामवर ढाडी गायक जैसे राजमान दयागढ़, देसराज लचकाणी, गुरमेल पंधेर, अर्जुन गुआरे वाला, आदि को सुना और संगीत की बारीकियों को सुन सुन कर हासिल किया। इसके अतिरिक्त आपने ढाडी सोहन सिंह शीतल से ढाडी गायन की शिक्षा ली। आपके जत्थे में प्रेम सिंह और शीतल सिंह शामिल हैं जिन्होंने कई बार पाकिस्तान के लाहौर, ननकाना साहिब, जैसे पाक–पवित्र स्थानों पर वार गायन का प्रस्तुतिकरण किया और साथ–साथ सूफी कवियों की रचनाओं का भी गायन किया। आपने ऐसे ही पंजाब के अतिरिक्त अन्य

राज्यों में जाकर सूफियाना गायन की प्रस्तुतियां दी और श्रोताओं को सूफियाना गायन से अवगत कराया। आपने बहुत से सम्मान भी हासिल किए जैसे '1995 में वैसाखी के मेले, तख्त श्री केशगढ़ साहिब' द्वारा सम्मान, 2006 में पाकिस्तान में भी आपकी ढाडी गायन प्रस्तुति से प्रसन्न होकर आपको विशेष सम्मान दिया गया। वर्तमान में आपके जत्थे के साथी कलाकार विभिन्न सभ्याचारक समारोहों में जाकर ढाडी कला द्वारा सूफियाना गायन का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त ढाडी कलाकारों में ढाडी राजमान दयागढ़, ढाडी गुरमीत सिंह आदि के नाम भी वर्णनीय हैं जो सूफियाना गायकी को प्रचारित व प्रसारित करने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं

उपरोक्त सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में विभिन्न विधाओं से जुड़े हुए गायक कलाकारों के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सूफी फकीरों द्वारा रचित मानव हितकारी सूफीमत विचारधारा को सूफियाना गायन के रूप में प्रचार–प्रसार कर जनसमूह को उस ईश्वर अल्लाह की सच्ची ईबादत का संदेश देने में पंजाब के कलाकारों ने अपनी कला के द्वारा हर वर्ग तक पहुँचाया। संगीत और साहित्य कला एक दूसरे के पूरक हैं, संगीत और साहित्य कला को जनसाधारण तक पहुंचाने में गायक कलाकार विशेष भूमिका निभाते हैं। इसी तरह गायक कलाकारों ने विभिन्न गायन विधाओं की भांति शास्त्रीय, अर्द्धशास्त्रीय और लोक गायन शैलियों द्वारा सूफियाना गायन का प्रचार प्रसार किया और कर भी रहे हैं। सूफियाना गायन से सम्बन्धित कलाकारों के साथ भेंटवार्ता अधीन शोधकार्य संबंधी वार्तालाप के दौरान सूफीमत, सूफी संगीत, सूफियाना गायन परंपरा और सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में योगदान देने वाले विभिन्न विधाओं के कलाकारों की भूमिका, सूफियाना गायन के भविष्य आदि विषयों पर चर्चा संबंधी वार्तालाप से स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी सच्ची इबादत नुमा गायन से प्रभावित होकर युवा कलाकार भी इस परंपरा की ओर अग्रसर हुए हैं और हो रहे हैं। अतः स्पष्ट हो जाता है कि सूफी संगीत या सूफियाना गायन जिसे हर वर्ग का व्यक्ति पसंद करता है ऐसी रूहानीमय भरी गायकी है जो सभी को प्रभावित कर ईश्क मिजाज़ी से ईश्क हकीकी का अनुभव करवाती है जो वर्तमान में भारतीय संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा है और आवाम को सुकून प्रदान कर अध्यात्मिकता की ओर अग्रसर कर रही है। सूफियाना गायन की

इस शैली को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विश्व ख्याति दिलाने का श्रेय पंजाब के गायक कलाकारों को जाता है।

———